अच्छे लोग
इस्लाम की नज़र में

इरफ़ान ख़लीली

अनुवादक

डॉ॰ पी॰ एच॰ चौबे

विषय-सूची

(अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, बड़ा रहमवाला है।)

दो शब्द

इस्लाम ख़ुदा की ओर से भेजा हुआ सच्चा दीन है । हज़रत मुहम्मद *(सल्ल॰)* के द्वारा यह दीन हमें मिला है । इस दीन पर ईमान लानेवाले और इसपर अमल करनेवाले ही सच्चे मुसलमान हैं ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने ख़ुदा के हुक्म से और ख़ुदा की ओर से इनसानों को उनकी पूरी ज़िन्दगी के लिए ऐसे सुनहरी उसूल और शिक्षाएँ दीं हैं कि उनपर अमल करके इंसान की ज़िन्दगी सुख-शान्ति की ज़िन्दगी बन सकती है और फिर एक बेहतरीन समाज वुजूद में आ सकता है ।

प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद *(सल्ल॰)* ने उन शिक्षाओं पर ख़ुद अमल करके और अपने साथियों (सहाबा *रज़ि॰*) को उसपर अमल करा के एक ऐसा मिसाली समाज बनाकर दिखा दिया जो रहती दुनिया तक एक नमूना और एक आईना है । इस नमूने और इस आईने को सामने रखकर हम मुसलमान अपनी ज़िन्दगी का जाइज़ा लें और उसके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करें ताकि दुनिया और आख़िरत में हम कामयाब हों ।

इस किताब में इनसान की पूरी ही ज़िन्दगी के बारे में इस्लाम की शिक्षाएँ बड़े ही सादा अन्दाज़ में पेश की गई हैं, ताकि उनको समझना और अमल करना आसान हो ।

इस्लामी साहित्य ट्रस्ट (रजिस॰) हिन्दी ज़बान में इस्लामी शिक्षाओं पर आधारित किताबें तैयार करने की ख़िदमत में लगा हुआ है । इस बेहतरीन किताब को आपके सामने पेश करने का सौभाग्य हमें मिला, इसपर हम ख़ुदा का शुक्र अदा करते हैं ।

ख़ुदा से दुआ है कि वह इस किताब को ज़्यादा से ज़्यादा मुफ़ीद बनाए !

नसीम ग़ाज़ी
अध्यक्ष
इस्लामी साहित्य ट्रस्ट

कुछ अल्फ़ाज़ के मतलब

इस किताब में कुछ ऐसे अल्फ़ाज़ आएँगे, जिनको मुख़्तसर शक्ल में लिखा गया है । किताब पढ़ने से पहले ज़रूरी है कि उन अल्फ़ाज़ की मुकम्मल शक्ल और मतलब समझ लिया जाए, ताकि किताब पढ़ते वक़्त कोई परेशानी न हो । ऐसे अल्फ़ाज़ ये हैं :

अलैहि॰ : इसकी मुकम्मल शक्ल है, **'अलैहिस्सलाम'**, यानी 'उनपर सलामती हो ।' नबियों और फ़रिश्तों के नाम के साथ इज़्ज़त और मुहब्बत के लिए ये अल्फ़ाज़ बढ़ा देते हैं :

रज़ि॰ : इसकी मुकम्मल शक्ल है, **'रज़ियल्लाहु अन्हु'**, इसके मायने हैं अल्लाह उनसे राज़ी हो !' **'सहाबी'** के नाम के साथ यह इज़्ज़त और मुहब्बत की दुआ बढ़ा देते हैं ।

सहाबी उस ख़ुशक़िस्मत मुसलमान को कहते हैं, जिसे नबी सल्ल॰ से मुलाक़ात का मौक़ा मिला हो । **सहाबी** की जमा (बहुवचन) **सहाबा** और मुअन्नस (स्त्रीलिंग) **सहाबियः** है ।

रज़ि॰ अगर सहाबिया के नाम के साथ इस्तेमाल हुआ हो तो **रज़ियल्लाहु अन्हा** पढ़ते हैं और अगर **सहाबा** के लिए इस्तेमाल हुआ हो तो **रज़ियल्लाहु अन्हुम** कहते हैं ।

सल्ल॰ : इसकी मुकम्मल शक्ल है — **'सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम'** । इसका मतलब है 'अल्लाह उनपर रहमत और सलामती की बारिश करे!' हज़रत मुहम्मद का नाम लिखते, लेते या सुनते हैं तो इज़्ज़त और मुहब्बत के लिए यह दुआ बढ़ा देते हैं ।

'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

(अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, बड़ा रहमवाला है।)

भूमिका

आईना तो आप रोज़ देखते ही होंगे। वह आपके ज़ाहिरी जिस्म व पहनावे को बताता है और उसे सँवारने में सहायता करता है। यदि आप आईने से काम न लें तो हो सकता है कि एक दिन आप उस हालत में घर से बाहर निकलें कि आपको जो देखे वह देखता ही रह जाए और कछ मुँहफट तो आपका मज़ाक़ तक करने से न चूकें।

इसी तरह क्या एक ऐसे आईने की ज़रूरत नहीं है जो हमारे आन्तरिक जिस्म व लिबास को दिखला सके, जिसे देखकर हम अपनी अन्दरूनी ख़ूबियों को निखार सकें और बुराइयों या बदनुमाइयों को दूर कर सकें। वास्तव में एक ऐसे आईने की अत्याधिक आवश्यकता है और ऐसे बहुत-से आईने मौजूद भी हैं, लेकिन मैं जो आईना आपके सामने पेश कर रहा हूँ इसे मैंने अपनी ज़रूरत के अनुसार तैयार किया है। इसके पदार्थ वही चौदह सौ साल पुराने हैं। कोई एक भी नया नहीं है, लेकिन उनको तरतीब देने में मैंने यह कोशिश की है कि एक अछूतापन पैदा हो जाए, ताकि यह हमारे लिए ज़्यादा फ़ायदेमंद साबित हो सके। आप भी इसमें अपना रूप देखें, लेकिन इससे फ़ायदा उठाते समय किताब के मुरत्तिब (सम्पादक) को अनदेखा न करें। अल्लाह आपको इसका बदला दे!

अन्त में यह भी बता दूँ कि मैंने इस आईने की तैयारी में निम्नलिखित किताबों की मदद ली है –

1. ज़ादे सफ़र, तर्जुमा रियाज़ुस्सालिहीन

2. शमाइले तिरमिज़ी
3. राहे अमल
4. हिसने हसीन
5. अज़कारे मसनूना

अल्लाह तआला इन किताबों के मुरत्तब करनेवालों और तर्जुमा करनेवालों को अच्छा बदला दे। आमीन!

इरफ़ान ख़लीली

दिसम्बर, 1975 ई० रामपुर

अच्छा मुसलमान

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अमल का दारोमदार सिर्फ़ नीयत पर है। इनसान को वही मिलेगा, जिसकी उसने नीयत की होगी।"

—बुख़ारी, मुसलिम

(2) एक आनेवाले ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा कि "ईमान क्या है?"

रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "ईमान यह है कि तुम अल्लाह को, उसके फ़रिश्तों को, उसकी भेजी हुई किताबों को, उसके रसूलों को और आख़िरत को हक़ जानो तथा हक़ मानो और इस बात को भी मानो कि दुनिया में जो कुछ होता है अल्लाह की तरफ़ से होता है, चाहे वह भला हो या बुरा।" —मुसलिम

(3) नबी (सल्ल०) ने लोगों से पूछा — "जानते हो एक अल्लाह पर ईमान लाने का क्या मतलब है?"

उन्होंने अर्ज़ किया — "अल्लाह और उसका रसूल (सल्ल०) ही बेहतर जानकारी रखते हैं।"

आप (सल्ल०) ने कहा — "ईमान यह है कि आदमी इस हक़ीक़त की गवाही दे कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ ठीक तरीक़े से अदा करे, ज़कात दे और रमज़ान के रोज़े रखे।" —मिशकात

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिसने अल्लाह के लिए दोस्ती की और अल्लाह के लिए दुश्मनी की, और अल्लाह के लिए दिया और अल्लाह के लिए रोक रखा, उसने अपने ईमान को पूरा किया।" —बुख़ारी

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — "ईमान का मज़ा उस आदमी ने पाया, जिसने इस बात को मान लिया और (दिल व जान से)

स्वीकार कर लिया कि अल्लाह उसका रब है, इस्लाम उसका दीन है और मुहम्मद (सल्ल०) उसके रसूल हैं।''

—बुख़ारी, मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''तुममें से कोई आदमी (सच्चा और पाक) मोमिन नहीं हो सकता, जब तक कि मैं उसकी निगाह में उसके बाप, उसके बेटे और सारे इनसानों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ।''

—बुख़ारी, मुसलिम

(7) एक आदमी ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) के पास आया और उसने निवेदन किया — ''मैं आपसे प्यार करता हूँ।''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जो तुम कहते हो उसपर ग़ौर कर लो और समझ लो।''

उसने तीन बार अर्ज़ किया — ''ख़ुदा की क़सम! मैं आपसे मुहब्बत करता हूँ।''

फिर आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — ''अगर तुम अपनी बात में सच्चे हो तो भूखे-प्यासे रहने के लिए पूरी तरह तैयार हो जाओ; क्योंकि जो लोग मुझसे प्यार करते हैं उनकी तरफ़ भुखमरी और फ़ाक़ा सैलाब से अधिक तेज़ी के साथ आता है।''

— तिरमिज़ी

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''मेरी उम्मत के सब लोग जन्नत में जाएँगे, मगर वे जन्नत से महरूम रहेंगे जिन्होंने इनकार किया।''

लोगों ने पूछा — ''ऐ अल्लाह के रसूल! इनकार कौन करेगा?''

आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — ''जिसने मेरी इताअत की वह जन्नत में जाएगा। जिसने मेरी नाफ़रमानी की (मानो) उसने इनकार किया।''

—बुख़ारी

(9) नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — ''अल्लाह ने कुछ फ़र्ज़ मुक़र्रर किए हैं उन्हें बरबाद न करना, कुछ बातों को हराम किया है उनको न करना, कुछ हदबन्दियाँ की हैं उन्हें फलाँगकर आगे न बढ़ना, कुछ चीज़ों से उसने सोच-समझकर ख़ामोशी इख़तियार की है तुम उनकी उधेड़-बुन में न पड़ना।''

— मिशकात

(10) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा गया कि यह दुआ जिसे हम अपनी बीमारियों के सिलसिले में करते हैं और ये दवाएँ जो हम अपने मर्ज़ को दूर करने के लिए इस्तेमाल करते हैं तथा ये सावधानियाँ जो हम दुखों और मुसीबतों से बचने के लिए इख़तियार करते हैं, क्या ये अल्लाह की तक़दीर को टाल सकती हैं?''

आपने फ़रमाया — ''ये सब चीज़ें भी तो अल्लाह की तक़दीर में से हैं।''
— तिरमिज़ी

(11) हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि०) का कथन है कि एक दिन जब कि मैं हुज़ूर (सल्ल०) के पीछे सवारी पर बैठा था, आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया:

''ऐ लड़के! मैं तुझे कुछ बातें बताता हूँ। देख, तू ख़ुदा को याद रख, तो ख़ुदा तुझको याद रखेगा। तू ख़ुदा को याद रख, तो ख़ुदा को अपने सामने पाएगा। जब तुझे कुछ माँगना हो तो ख़ुदा से माँग। जब तुझे किसी कठिनाई में मदद की ज़रूरत हो तो ख़ुदा से मदद माँग, ख़ुदा को अपना मददगार बना और इस बात पर विश्वास रख कि सब लोग मिलकर भी तुझे कोई लाभ पहुँचाना चाहें तो वे तुझको लाभ नहीं पहुँचा सकते, सिवाय उसके जो अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है। और (इसी तरह) सभी लोग मिलकर तुझे कोई नुक़सान पहुँचाना चाहें तो वे कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते सिवाय उसके जो अल्लाह ने तेरे लिए मुक़द्दर कर दिया है।''
— मिशकात

(12) ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने यह आयत पढ़ी — ''उस दिन ज़मीन अपने सारे हाल बयान करेगी'' (क़ुरआन, 99:4) और सहाबा (रज़ि०) से पूछा कि ''जानते हो हाल बयान करने का क्या मतलब है?''

सहाबा (रज़ि०) ने कहा — ''अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) को इसकी अधिक जानकारी है।''

आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — ''ज़मीन क़ियामत के दिन गवाही देगी - - - बयान करेगी कि फ़लाँ मर्द और फ़लाँ औरत ने मेरी पीठ पर फ़लाँ दिन फ़लाँ समय बुरा या अच्छा काम किया, यही मतलब है इस आयत का।

लोगों के आमाल को इस आयत में अख़बार कहा गया है।''　　— तिरमिज़ी

(13) ख़ुदा के पैग़म्बर (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''तुममें से हर व्यक्ति से अल्लाह तआला ख़ुद ही बात करेगा (यानी हिसाब लेगा) और वहाँ न तो कोई उसका सिफ़ारिशी होगा और न कोई आड़ होगी जो उसे छिपा ले। वह व्यक्ति अपनी दाहिनी तरफ़ (किसी सिफ़ारिशी के लिए) देखेगा तो केवल उसके अपने कर्मों के अतिरिक्त उसे अन्य कोई नज़र न आएगा। फिर बाएँ तरफ़ देखेगा तो उधर भी उसके कर्मों के अलावा अन्य कोई दिखाई न देगा। फिर सामने की तरफ़ नज़र दौड़ाएगा तो उधर भी केवल दोज़ख़ को (उसकी तमाम हौलनाकियों के साथ) देखेगा - - - - तो ऐ लोगो! आग से बचने की फ़िक्र करो, एक खजूर का आधा हिस्सा ही देकर सही।''　　— बुख़ारी, मुसलिम

(14) ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — ''मैं हौज़ (कौसर) पर तुमसे पहले पहुँचकर तुम्हारा इन्तिज़ार करूँगा और तुम्हें पानी पिलाने का इन्तिज़ाम करूँगा। जो मेरे पास आएगा, कौसर का पानी पिएगा और जो पिएगा उसे फिर कभी प्यास न लगेगी। और कुछ लोग मेरे पास आएँगे, मैं उन्हें पहचानता होऊँगा और वह मुझे पहचानते होंगे, लेकिन उन्हें मेरे पास पहुँचने से रोक दिया जाएगा। तो मैं कहूँगा, ''यह मेरे आदमी हैं (इन्हें मेरे पास आने दो)।'' जवाब में मुझसे कहा जाएगा कि ''आप नहीं जानते, इन्होंने आपके इन्तिक़ाल के बाद आपके दीन में कितनी नई चीज़ें (बिदअतें) दाख़िल कर दी हैं।'' तो मैं कहूँगा, ''दूरी हो दूरी हो, उन लोगों के लिए जिन्होंने मेरे बाद दीन के नक़्शे को बदल डाला।''　　— बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा अमल करनेवाला

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिसने कोई नेकी इस मक़सद से की कि लोग सुनें और उसकी शोहरत हो तो ख़ुदा क़ियामत के दिन उसको मशहूर करेगा और उसको रुसवा करेगा। और जो अल्लाह के लिए अमल करेगा तो अल्लाह तआला उसका अच्छा बदला देगा।" —बुख़ारी, मुसलिम

(2) ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — "क़ियामत के दिन सबसे पहले एक ऐसे व्यक्ति के खिलाफ़ फ़ैसला सुनाया जाएगा जिसने शहादत पाई होगी। उसे ख़ुदा की अदालत में पेश किया जाएगा, फिर ख़ुदा उसे अपनी सब नेमतें याद दिलाएगा और उसे वह सब नेमतें याद आ जाएँगी। तब पूछेगा कि तूने मेरी नेमतें पाकर क्या काम किया? वह कहेगा कि मैंने तेरी ख़ुशी के लिए तेरे दीन से लड़नेवालों के खिलाफ़ जंग की, यहाँ तक कि मैंने अपनी जान दे दी। ख़ुदा उससे कहेगा कि तूने यह बात ग़लत कही कि मेरी ख़ातिर तूने जंग की, तूने तो सिर्फ़ इसलिए जंग की (और जान की बाज़ी लगाई) कि लोग तुझे साहसी और बहादुर कहें, तो दुनिया में तुझे उसका फल मिल गया। फिर हुक्म होगा कि उस 'मर्दे शहीद' को मुँह के बल घसीटते हुए ले जाओ और जहन्नम में डाल दो। चुनांचे उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा। फिर एक दूसरा व्यक्ति ख़ुदा की अदालत में हाज़िर किया जाएगा जो दीन का आलिम, शिक्षक और क़ुरआन का क़ारी होगा। उसे ख़ुदा अपनी नेमतें याद दिलाएगा और उसे सब नेमतें याद आ जाएँगी। तब ख़ुदा उससे कहेगा, "इन नेमतों को पाकर तूने क्या अमल किया?" वह कहेगा, "ऐ ख़ुदा! मैंने तेरी ख़ातिर तेरा दीन सीखा और तेरी ख़ातिर दूसरों को उसकी शिक्षा और तालीम दी और तेरी ख़ातिर क़ुरआन मजीद पढ़ा।" अल्लाह तआला फ़रमाएगा, "तुमने झूठ कहा। तुमने तो इसलिए इल्म सीखा था कि लोग तुम्हें आलिम कहें और क़ुरआन इस ग़रज़ से तुमने पढ़ा था कि लोग तुम्हें क़ुरआन का जाननेवाला कहें, तो तुम्हें दुनिया में उसका फल मिल गया है।" फिर आदेश होगा कि इसे चेहरे के बल घसीटते ले जाओ और

जहन्नम में फेंक दो। चुनांचे उसे घसीटते हुए ले जाकर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। और तीसरा आदमी वह होगा जिसको अल्लाह ने दुनिया में ख़ुशहाली दी थी और हर क़िस्म की दौलत से मालामाल किया था। ऐसे व्यक्ति को ख़ुदा की अदालत में हाज़िर किया जाएगा। वह उसे अपनी सभी नेमतें बताएगा और वह सारी नेमतों को जान लेगा। क़बूल करेगा कि हाँ ये सब नेमतें उसे दी गई थीं। तब उससे उसका रब पूछेगा, ''मेरी नेमतों को पाकर तूने क्या काम किया?'' वह जवाब में कहेगा, ''जिन-जिन मदों में ख़र्च करना तुझे पसंद था उन सभी मदों में मैंने तेरी ख़ुशी के लिए ख़र्च किया।'' अल्लाह तआला फ़रमाएगा, ''तूने झूठ कहा, तूने तो ये सारा माल इसलिए ख़र्च किया था कि लोग तुझको सख़ी (दानशील) कहें, तो यह ख़िताब तुझे दुनिया में मिल गया, फिर आदेश होगा कि इसको चेहरे के बल घसीटते हुए ले जाओ और आग में डाल दो। चुनांचे उसे ले जाकर आग में डाल दिया जाएगा।''

—मुसलिम

(3) एक औरत हज़रत आइशा (रज़ि०) के पास बैठी हुई थी। इतने में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) आ गए। पूछा — ''यह कौन है?''

उन्होंने कहा, ''यह फ़लाँ औरत है और यह बहुत नमाज़ें पढ़ती है।''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''इतना ही करो जितनी तुममें ताक़त हो। अल्लाह नहीं उकताएगा बल्कि तुम उकता जाओगी, अल्लाह तआला को वही इबादत और अमल अधिक प्रिय है जिसपर अमल करनेवाला हमेशा क़ायम रहे।''

—बुख़ारी, मुसलिम

(4) ''अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को जब दो कामों में से किसी एक को चुनने का मौक़ा होता जो गुनाह न हो तो आप (सल्ल०) आसान काम चुनते।''

—बुख़ारी, मुसलिस

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जिसने बेवजह सख़्ती की वह हलाक हुआ।''

—मुसलिम

(6) रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''दीन आसान है, दीन से जिसने ज़ोर आज़माई की, दीन ने उसको हरा दिया। तो बीच की राह अपनाओ और सन्तुलन

से काम लो, खुशख़बरी लो। सुबह और शाम (सुबह और शाम की नमाज़) से मदद चाहो तथा कुछ अँधेरे में उठने से (तहज्जुद की नमाज़ से)।''

—रियाज़ुस्सालिहीन

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''मुझको छोड़ दो जब मैं तुमको छोड़ूँ (किसी मामले में बेवजह न कुरेदो)। बेशक पिछली उम्मतों को सवालों की ज़्यादती और नबियों की मुख़ालिफ़त ने हलाक किया। जब तुमको किसी बात से मना करूँ तो उससे दूर रहो और जिस बात का आदेश दूँ उसको करो जितनी तुममें ताक़त हो।'' —बुख़ारी

(8) हज़रत उमर (रज़ि०) को देखा गया कि हजरे असवद को चूम रहे थे और कह रहे थे, ''मैं जानता हूँ कि तू पत्थर है। न लाभ पहुँचा सकता है और न नुक़सान। अगर मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को तुझे चूमते न देखा होता तो मैं तुझको न चूमता।'' — बुख़ारी, मुसलिम

(9) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जो आदमी किसी अहम काम के शुरू में 'अल्हम्दुलिल्लाह' न कहेगा तो वह काम अधूरा रह जाएगा।''

—अबु दाऊद

(10) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक व्यक्ति को दुआ माँगते सुना कि न उसने अल्लाह की तारीफ़ की, न नबी (सल्ल०) पर दुरूद भेजा। तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''इस आदमी ने जल्दी की।'' फिर आप (सल्ल०) ने उसको बुलाया और उससे कहा या किसी और से कि ''जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ तो पहले अल्लाह की तारीफ़ करो, फिर मुझपर दुरूद भेजो, फिर जो चाहो दुआ करो।'' —अबू दाऊद, तिरमिज़ी

(11) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''बन्दे की दुआ हमेशा क़बूल होती है जब तक कि वह दुआ गुनाह की और रिश्ते-नातों को काटने की न हो और यह कि (दुआ माँगनेवाला) जल्दी न करे।''

लोगों ने पूछा — ''जल्दी कैसी?''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''यह न कहे कि मैंने दुआ की और क़बूल

न हुई। फिर थक जाए और छोड़ दे।'' —मुसलिम

(12) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''प्रत्येक मुसलमान की दुआ अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाता है। उसकी मुँह माँगी मुराद अता फ़रमाता है और किसी मसलहत से नहीं देता तो उसकी किसी आनेवाली मुसीबत को दूर कर देता है, मगर गुनाह और रिश्ते-नाते को काटने की दुआ न हो।''

एक आदमी ने अर्ज़ किया — ''ऐ अल्लह के रसूल! अब तो हम बहुत माँग लेंगे।''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अल्लाह तआला उससे भी ज़्यादा देनेवाला है।'' — तिर्मिज़ी

(13) खुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अल्लाह ने हर काम को अच्छे से अच्छे तरीक़े से करने का आदेश दिया है - - - - यहाँ तक कि जब तुम ज़बह करो तो भलाई के साथ ज़बह करो। अपनी छुरी को तेज़ कर लो, ताकि ज़ब्ह किए जानेवाले जानवर को कष्ट न हो।'' —मुसलिम

(14) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ''जिस चीज़ में नरमी होती है उसकी शोभा को बढ़ा देती है और जिस चीज़ से नरमी निकल जाती है उसको बुरा कर देती है।'' —मुसलिम

(15) एक आदमी रसूल (सल्ल०) के पास आ गया और अर्ज़ किया कि ''अल्लाह के रसूल! मुझे ऐसा काम बताएँ जिसको मैं अपना लूँ तो अल्लाह मुझसे प्यार करने लगे और लोग भी मुझसे मुहब्बत करें।''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि 'दुनिया में लिप्त न हो तो अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा और जो कुछ लोगों के पास है उसका लालच न करो, बेफ़िक्र और ग़नी (बेनियाज़) हो जाओ तो लोग तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे।''

अच्छा नमाज़ी

(1) अल्लाह के पैग़म्बर (सल्ल०) ने एक सवाल करनेवाले को जवाब देते हुए फ़रमाया — "अल्लाह की इबादत इस तरह करो जैसे तुम उसको देख रहे हो। अगर तुम उसको नहीं देखते हो तो वह तो तुमको देखता ही है।"

—रियाज़ुस्सालिहीन

(2) हज़रत इब्न मसऊद (रज़ि०) ने कहा है कि "जिस व्यक्ति को यह शौक़ हो कि क़ियामत के दिन वह मुसलमान की तरह अल्लाह के सामने पेश हो तो वह पाँचों वक़्त की नमाज़ जमाअत के साथ उस मस्जिद में अदा करे जहाँ अज़ान दी जाती है। अल्लाह ने तुम्हारे नबी (सल्ल०) को जो हिदायत दी है उसमें पाँचों नमाज़ें जमाअत के साथ पढ़ना भी शामिल है। तो अगर तुमने नमाज़ अपने घरों में पढ़ ली जैसा कि पीछे रह जानेवाला अपने घर में पढ़ता है, तो निश्चय ही तुमने अपने नबी (सल्ल०) की सुन्नत छोड़ दी। और अगर तुमने अपने नबी (सल्ल०) की सुन्नत छोड़ दी तो तुम गुमराह हो गए। हमने किसी सहाबी को जमाअत से ग़ैर हाज़िर होते नहीं देखा। जमाअत से वही व्यक्ति ग़ैर हाज़िर होता था जो खुला हुआ मुनाफ़िक़ होता था। बीमार भी दो आदमियों के सहारे आकर नमाज़ में शामिल हो जाते थे।" —मुसलिम

(3) ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — "घर और दुकान पर नमाज़ पढ़ने से जमाअत से नमाज़ पढ़ने का सवाब सत्ताईस गुना अधिक मिलता है। जो आदमी अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर मसजिद में आए और नमाज़ ही का इरादा करके घर से निकला हो तो हर क़दम पर उसका दर्जा बुलन्द किया जाएगा, उसकी ख़ताएँ दूर की जाएँगी। यहाँ तक कि मसजिद में दाख़िल होगा तो नमाज़ में शुमार होगा और जब तक वह मसजिद में नमाज़ की नीयत से रुका रहता है, फ़रिश्ते उसके हक़ में दुआ करते रहते हैं। वे कहते हैं "ऐ अल्लाह! इसपर रहम कर और इसको बख़्श दे और इसकी तौबा क़बूल कर जब तक वुज़ू से रहे।"

—बुख़ारी, मुसलिम

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जब मुसलमान बन्दा या मोमिन बन्दा वुज़ू करता है और अपने चेहरे को धोता है तो उसके चेहरे से उसकी तमाम ख़ताएँ जिनको अपनी आँखों से देखा है - - - - पानी के साथ या पानी के आख़िरी क़तरे के साथ दूर हो जाती हैं। फिर हाथों को धोता है तो उसके हाथों से किए गए तमाम गुनाह पानी के साथ या पानी की आख़िरी बूँद के साथ निकल जाते हैं जिनको उसने अंजाम दिया था। फिर जब अपने पैरों को धोता है तो उसके पाँव द्वारा की गई तमाम ख़ताएँ पानी के साथ या पानी की आख़िरी बूँद के साथ दूर हो जाती हैं, यहाँ तक कि वह तमाम गुनाहों से पाक हो जाता है।

— मुसलिम

(5) ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''पाँच समय की नमाज़ें, और जुमा अगले जुमा तक, रमज़ान अगले रमज़ान तक, बीच के तमाम गुनाहों को मिटा देनेवाली हैं, अगर बड़े गुनाहों से बचा जाए।'' — मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पूछा कि ''क्या मैं तुमको ऐसी बात की सूचना दूँ, जिसकी वजह से अल्लाह गुनाहों को मिटा देगा और दर्जे बुलन्द करेगा?''

सहाबा (रज़ि०) ने कहा, ''हाँ, अल्लाह के रसूल।''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''तकलीफ़ के समय (अर्थात जब कड़ाके की ठंड पड़ रही हो) पूरा-पूरा वुज़ू करो, मसजिद की तरफ़ क़दमों की ज़्यादती करो और नमाज़ का इन्तिज़ार नमाज़ के बाद करो।'' — मुसलिम

(7) ''जब वुज़ु शुरू करे तो बिसमिल्लाह कहे।'' — अबू दाऊद

(8) वुज़ू से फ़ारिग होने के बाद निगाह आसमान की तरफ़ उठाए और यह दुआ पढ़े—

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ . اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ .

''अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू, व अश्हदु

अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू । अल्ला हुम्मजअलनी मिनत्तव्वाबी-न वज-अलनी मिनल मुत-तहहिरीन।''

(मैं गवाही देता हूँ कि ख़ुदा के अलावा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल०) उसके बन्दे और रसूल हैं। अल्लाह मुझे तौबा करनेवालों और पाकी हासिल करनेवालों में से बना दे।)
—हिसने हसीन

(9) ख़ुदा के पैग़म्बर (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जब नमाज़ खड़ी होने लगे तो फ़र्ज़ के अलावा कोई नमाज़ दुरुस्त नहीं।''
— मुसलिम

(10) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जब जमाअत खड़ी हो जाए तो दौड़कर न जाओ। जितनी नमाज़ पाओ पढ़ लो, जो छूट जाए उसको पूरा कर लो।''
— बुख़ारी, मुसलिम

(11) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — ''अपनी सफ़ों को बराबर करो वरना अल्लाह तआला तुममें फूट डाल देगा।'' — बुखारी, मुसलिम

(12) अल्लाह के पैग़म्बर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ''तुम लोग इमाम से पहले सिर उठाने से नहीं डरते? कहीं अल्लाह तआला पहले उठनेवाले सिर को गधे के सिर में बदल न दे या उसकी सूरत गधे की-सी न कर दे।''
— बुख़ारी, मुसलिम

(13) अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''लोगों की निगाह नमाज़ के समय ऊपर उठ जाती है और वे परवाह नहीं करते। वे ऐसा न करें नहीं तो उनकी निगाहें उचक ली जाएँगी।''
— बुख़ारी

(14) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — ''नमाज़ में इधर-उधर देखने से बचो, ऐसा करना हलाकत का सबब है।''
— तिरमिज़ी

(15) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का कथन है कि ''जब मसजिद में दाख़िल हो तो बैठने से पहले दो रकअतें (तहय्यतुल मसजिद) पढ़ लो।''
— बुखारी, मुसलिम

(16) ख़ुदा के पैग़म्बर (सल्ल०) ने हज़रत बिलाल (रज़ि०) से फ़रमाया– "इस्लाम लाने के बाद तुमने जितने काम किए हैं उनमें सबसे अधिक जिस अमल से तुम्हें उम्मीद हो मुझे बताओ। मैंने तुम्हारे जूतों की आवाज़ जन्नत में अपने आगे से सुनी है।"

हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने अर्ज़ किया — "मैंने कोई अमल ऐसा नहीं किया जिससे मुझे उम्मीद हो, सिवाय उसके कि रात-दिन में जिस समय भी वुज़ू या ग़ुस्ल करता हूँ तो उसके साथ जितनी भी नमाज़ अल्लाह ने मेरे लिए मुक़र्रर की हैं (तहय्यतुल वुज़ू) ज़रूर पढ़ता हूँ।" —बुख़ारी, मुसलिम

(17) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा — "नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला अगर उसके गुनाह को जान ले तो चालीस............तक ठहरना गुज़रने से अच्छा समझे। (रावी को याद नहीं कि चालीस दिन कहा गया है या चालीस महीने या चालीस साल)।" —बुख़ारी, मुसलिम

(18) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम लोग न क़ब्रों पर नमाज़ पढ़ो, न उनपर बैठो।" —हज़रत अबू मरसद कनाना बिन हसीन

(19) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया— "जिसने हर नमाज़ (यानी फ़र्ज़) के बाद तैंतीस-तैंतीस बार 'सुब्हानल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह, अल्लाहु अकबर, कहा और एक बार

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

"ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर"

पढ़कर सौ पूरे कर दे तो अगर समुद्र के झाग के बराबर भी उसने ग़लतियाँ की हों तो भी वे माफ़ हो जाएँगी।" —मुसलिम

नोट : कुछ रिवायतों में है कि पहले दोनों कलिमों को तैंतीस-तैंतीस बार

और अल्लाहु अकबर चौंतीस बार पढ़ लिया करो अथवा तीनों कलिमों को ग्यारह-ग्यारह बार पढ़ लिया करो।

(20) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज़रत मआज़ (रज़ि०) का हाथ पकड़कर फ़रमाया — "ऐ मआज़ ख़ुदा की क़सम! मुझे तुमसे मुहब्बत है।"

फिर फ़रमाया — "मैं तुमको वसीयत करता हूँ कि हर नमाज़ के पीछे इन कलिमों को कहना और कभी न छोड़ना —

رَبِّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ .

"रब्बि अइन्नी अला ज़िकरि-क व शुकरि-क व-हुसनि इबा-दतिक।"

(ऐ हमारे परवरदिगार हमारी मदद फ़रमा, अपने ज़िक्र और अपने शुक्र तथा अपनी अच्छी इबादत पर।) — अबू दाऊद

(21) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाते तो तीन बार इस्तिग़फ़ार पढ़ते थे और फिर यह कलिमा कहते थे —

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْکَ السَّلَامُ تَبَارَکْتَ یَا ذَالْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ .

"अल्ला हुम्-म अन-तस्सलाम, व मिन-कस्सलाम, तबारक-त या ज़ल जलालि वल इकराम।"

(ऐ अल्लाह! तू ही सलामती है और तुझी से सलामती है। बड़ा बरकतवाला है तू ऐ जमाल व इकरामवाले।)

मालूम किया गया कि हुज़ूर (सल्ल०) कौन-सा इस्तिग़फ़ार पढ़ते थे? बताया गया — **'अस्तग़फ़िरुल्लाह, अस्तग़फ़िरुल्लाह।'** — मुसलिम

(22) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — "फ़ज्र व मग़रिब की नमाज़ के बाद किसी से बात करने से पहले सात बार यह दुआ पढ़ लिया करो। अगर उस दिन या उस रात में मर जाओगे तो तुम जहन्नम से ज़रूर छुटकारा पाओगे—

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ .

"अल्ला हुम्-म अजिरनी मिनन्नार।"

(ऐ अल्लाह! मुझे जहन्नम की आग से पनाह दे।) —मिशकात

(23) मसजिद में दाखिल होते समय पहले दायाँ पैर अन्दर रखना चाहिए। रसूल (सल्ल०) का इरशाद है कि जब तुममें से कोई मसजिद में आए तो पहले नबी (सल्ल०) पर दुरूद भेजे और फिर यह दुआ पढ़े —

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ .

"अल्लाहुम-मफ़-तहली अबवा-ब रहमतिक।"

(ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।) — मुसलिम

(24) मसजिद से निकलते समय पहले बायाँ पैर बाहर रखे, फिर यह दुआ पढ़े—

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ .

"अल्लाहुम-म इन्नी अस अलु-क मिन फ़ज़लिक ।"

(ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ तेरे फ़ज़्ल व करम का।)

—मुसलिम

(25) नबी (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया — " जब खना आ जाए तो फिर नमाज़ नहीं और पाखाना-पेशाब की ज़रूरत मालूम हो तो नमाज़ नहीं होती।"

(अर्थात पहले आवश्यकता पूरी करनी चाहिए फिर नमाज़ पढ़नी चाहिए)।

—मुसलिम

(26) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फरमाया — "रात को जब सब लोग सो रहे हों तो तुम (तहज्जुद की) नमाज़ पढ़ा करो, (इस तरह) तुम सलामती के साथ जन्नत में दाखिल होगे।" —तिरमिज़ी

(27) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — " जब चुस्ती रहे, उस

समय तक नमाज़ पढ़ो और जब सुस्ती आने लगे तो सो जाओ।''

(यह आदेश तहज्जुद की और दूसरी नफ़ल नमाज़ों से सम्बन्धित मालूम होता है।)

—बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा रोज़ेदार

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को सूचना दी गई कि मैं (अब्दुल्लाह बिन उमर) कहता हूँ, ''जब तक ज़िन्दा रहूँगा दिन को रोज़े रखूँगा और रात को इबादत करूँगा।''

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मुझसे मालूम किया — ''तुम ही ने यह कहा है?''

मैंने अर्ज़ किया — ''अल्लाह के रसूल! मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा हों, बेशक मैंने ही यह बात कही है।''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''तुम इसकी सकत नहीं रख सकते। रोज़ा रखो और न भी रखो, सोओ भी और जागो भी और महीने में तीन दिन रोज़े रखो। एक रोज़ा में दस रोज़ों का सवाब मिलेगा।''

मैंने कहा — ''मैं इससे ज़्यादा की ताक़त रखता हूँ।''

तब आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''एक दिन रोज़ा रखो और दो दिन नाग़ा करो।''

मैंने अर्ज़ किया — ''मैं इससे ज़्यादा कर सकता हूँ।''

आप (सल्ल०) ने कहा — ''एक दिन रोज़ा रखो, एक दिन नाग़ा करो। हज़रत दाऊद (अलै०) इसी तरह रोज़े रखते थे और यह रोज़े की सबसे अधिक सन्तुलित (बीच की) शक्ल है।''

— रियाज़ुस्सालिहीन

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — ''अल्लाह तआला फ़रमाता है कि आदमी का हर अमल उसके लिए है और रोज़ा ख़ास मेरे लिए है। इसका बदला मैं दूँगा। और रोज़ा ढाल है। अगर तुममें से कोई रोज़े से हो तो न गन्दी बात मुँह से निकाले, न बदतमीज़ी करे, न झगड़ा करे। अगर कोई उसको गाली भी दे या झगड़ा करने पर उतारू हो जाए तो कह दे कि मैं रोज़े से हूँ।

और क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद (सल्ल०) की जान है कि रोज़ेदार के मुँह की बू अल्लाह को मुश्क से .ज्यादा पसन्द है।'' और आगे कहा कि ''रोज़ेदार को दो ख़ुशियाँ हासिल होती हैं, पहली इफ़्तार के समय जबकि वह रोज़ा खोलता है, दूसरी ख़ुशी क़ियामत के दिन होगी जब वह अपने रब से मिलेगा और अपने रोज़े का बदला देखेगा।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जिस व्यक्ति ने झूठ बोलना और झूठी बात पर अमल करना नहीं छोड़ा तो उसके खाना-पानी छोड़ देने की अल्लाह को कोई ज़रूरत नहीं।'' —बुख़ारी

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''महीने में तीन दिन के रोज़े (अय्यामे बैज़ 13, 14, 15 तारीखों को) पूरे ज़माने के रोज़ों के बराबर हैं।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(5) नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जुमा के दिन रोज़ा न रखो। हाँ एक दिन बाद या एक दिन पहले मिलाकर रखने में कोई हर्ज नहीं।''

—बुख़ारी, मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने लगातार रोज़े रखने से मना किया है।

—रियाज़ुस्सालिहीन

(7) अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया — ''सहरी खा लिया करो।''

—बुख़ारी

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''लोग अच्छी हालत में रहेंगे जब तक इफ़्तार करने में जल्दी करेंगे।'' —बुख़ारी

(9) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जिसने रमज़ान की रातों में ईमानी कैफ़ियत और आख़िरत में सवाब की नीयत से नमाज़ (तरावीह) पढ़ी तो उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिए जाएँगे।'' —मुत्तफ़िक़ अलैह

(10) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) रमज़ान के आख़िरी अशरे (दस दिनों) में रातों को अधिक से अधिक जागकर इबादत किया करते थे।

—मुसलिम, तिरमिज़ी

(11) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) रमज़ान के आख़िरी दस दिनों का एतिकाफ़ फ़रमाते थे। —बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा ख़र्च करनेवाला

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है। ख़र्च की शुरुआत उन लोगों से करो जिनकी तुम परवरिश करते हो और बेहतरीन सदक़ा वह है जो कुछ धन बचाकर किया जाए। जो मुहताज रहना चाहेगा अल्लाह उसे मुहताज रखेगा, जो ग़नी होना चाहेगा अल्लाह उसको ग़नी करेगा।''

—बुख़ारी

(2) अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''सदक़ा किसी के माल को घटाता नहीं।''

—मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''उस आदमी के हाल पर रश्क करना ठीक है जिसको अल्लाह तआला ने माल दिया और हक़ के साथ ख़र्च करने की तौफ़ीक़ और सलीक़ा भी दिया।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(4) वास्तव में सलीक़े का अर्थ यह है कि अल्लाह के दिए हुए माल को सही तरीक़े से हक़दारों का हक़ पहचानते हुए छिपाकर सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी के लिए ख़र्च करना।

नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — ''इनसान के मरते ही उसके अमल ख़त्म हो जाते हैं, लेकिन तीन चीज़ें बाक़ी रहती हैं, (इनमें से एक) वह ख़ैरात और सदक़ा है जिसका फ़ायदा (उसके मरने के बाद भी)जारी रहे यानी सदक़-ए-जारिया।''

—मुसलिम

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''सात आदमी हैं जिनपर अल्लाह तआला अपना साया करेगा, जिस दिन उसके साए के अलावा और किसी का साया न होगा। उनमें से एक आदमी वह है जो सदक़ा इस तरह छिपाकर देता है कि दाएँ हाथ से ख़र्च करता है पर बाएँ हाथ को ख़बर तक नहीं होती।''

—बुख़ारी, मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का कथन है कि — ''ऐ आदम की सन्तान! अगर तू अपने बचे हुए माल को ख़र्च कर डालेगा तो यह तेरे लिए अच्छा होगा और अगर तू उसे बचा-बचाकर रखेगा तो यह तेरे हक़ में बुरा होगा, लेकिन ज़रूरत के मुताबिक़ रोकने पर तुझे कोई मलामत नहीं करेगा और ख़र्च की शुरुआत उस व्यक्ति से कर जिसका तू सरपरस्त है।'' — मुसलिम

(7) अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अल्लाह जब किसी बन्दे को नेमतें देता है तो वह पसन्द करता है कि उस नेमत का असर उस बन्दे पर ज़ाहिर हो।''

यानी उसके खाने-पीने, रहने-सहने, लिबास, दानशीलता व फ़ैयाज़ी, मतलब यह कि हर चीज़ से अल्लाह की दी हुई उस नेमत का इज़हार होना ज़रूरी है। ऐसा न करना या इसके विपरीत व्यवहार करना अल्लाह को पसन्द नहीं है।

अच्छा मालदार

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "दौलत और इस्तिग़ना माल की कसरत से नहीं होता। दौलत दिल की दौलत है।" —बुख़ारी, मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अल्लाह तआला कहता है कि "ऐ आदम के बेटे! ख़र्च कर, तुझपर भी ख़र्च किया जाएगा।"

—बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने माल को बरबाद करने से मना किया है।

—बुख़ारी, मुसलिम

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "आग (जहन्नम) से बचो। कुछ नहीं तो ख़जूर का टुकड़ा ही देकर।" —बुख़ारी, मुसलिम

(5) अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — "रश्क के लायक़ वह है जिसको अल्लाह तआला माल दे तो वह अल्लाह की राह में लुटाए।"

—बुख़ारी, मुसलिम

(6) अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — "ख़र्च करो, गिन-गिनकर न रखो, वरना तुझे भी ख़ुदा गिन-गिनकर देगा और बाँध-बाँधकर न रखो, वरना तुझपर भी रोज़ी बाँध दी जाएगी।" —बुख़ारी, मुसलिम

(7) अल्लाह के पैग़म्बर (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो पवित्र (पाक) कमाई से खजूर के बराबर भी दान करता है, अल्लाह तआला उसको ज़रूर क़बूल फ़रमाता है और उसको अपने सीधे हाथ से लेकर उस व्यक्ति के लिए (जिसने दान किया) बढ़ाता है जैसे तुम अपने बछड़े का पालन करते हो, यहाँ तक कि वह (दान) पहाड़ के बराबर हो जाता है।" —बुख़ारी, मुसलिम

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुममें से किसको अपने

माल से अधिक अपने वारिस का माल पसन्द है।''

लोगों नें कहा — ''ऐ अल्लाह के रसूल! सबको अपना माल पसन्द है।''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''आदमी का माल वही है जो उसने आगे भेजा (अर्थात अल्लाह की राह में ख़र्च किया) और उसके वारिस का माल वह है जो पीछे छोड़ा (यानी तरके में छोड़ा)।'' —बुख़ारी

(9) नबी (सल्ल०) ने सूद खानेवाले और सूद खिलानेवाले पर लानत फ़रमाई है। —मुसलिम

तिरमिज़ी की हदीस में यह भी लिखा है कि सूद की लिखाई-पढ़ाई करनेवाले और गवाही देनेवाले पर भी लानत है।

अच्छे माँ-बाप

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जिसको अल्लाह तआला औलाद दे तो उसे चाहिए कि उसका अच्छा नाम रखे, उसको अच्छी शिक्षा दे और सलीक़ा सिखाए। फिर जब वह बालिग़ हो जाए तो उसकी शादी की व्यवस्था करे। शादी की उम्र को पहुँच जाने पर भी अगर उसकी शादी की व्यवस्था नहीं की और वह उसकी वजह से हराम काम कर बैठा तो उसके माँ-बाप उस गुनाह के ज़िम्मेदार होंगे।''

—बैहक़ी

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — ''अपनी औलाद की क़द्र करो।''

—इब्न माजा

औलाद की क़द्र यह है कि उसे अल्लाह की देन और उसकी अमानत समझकर उसकी क़द्र की जाए। सामर्थ्य के अनुसार उसकी ज़िन्दगी की ज़रूरतों की व्यवस्था की जाए। उसको बोझ और मुसीबत न समझा जाए।

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जिस आदमी के यहाँ लड़की पैदा हो, फिर वह न तो उसे कष्ट पहुँचाए और न उसका अपमान और नाक़द्री करे और न मुहब्बत और बरताव में लड़कों को उसपर प्राथमिकता दे, तो अल्लाह तआला लड़की के साथ उस अच्छे व्यवहार के बदले में उसको जन्नत देगा।''

—मुसनद अहमद

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जो आदमी लड़कियों की परवरिश उस समय तक करे कि वे जवान हो जाएँ तो क़ियामत के दिन मैं और वह इस तरह होंगे।'' आप (सल्ल०) ने अपनी अंगुलियों को मिलाकर दिखाया।

—मुसलिम

(5) हज़रत आइशा (रज़ि०) के पास एक औरत आई। उसके साथ उसकी दो लड़कियाँ थीं। उसने खाना माँगा। उन्होंने उसको तीन खजूरें दीं। औरत ने

एक-एक खजूर अपनी दोनों लड़कियों को दी और एक ख़जूर खाने की नीयत से अपने मुँह तक ले जाना चाहा कि लड़कियों ने फिर माँगा। औरत ने खजूर के दो टुकड़े करके एक-एक दोनों को दे दिया और चली गई। हज़रत आइशा (रज़ि०) को उसकी हालत पर ताज्जुब हुआ। उन्होंने उसका ज़िक्र अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से किया। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अल्लाह ने उन दोनों लड़कियों के ज़रिए उसपर जन्नत वाजिब कर दी और जहन्नम से आज़ाद किया।" —मुसलिम

(6) कुछ लोग अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आए और निवेदन किया, "क्या आप (सल्ल०) अपने बच्चों को प्यार करते हैं?"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "हाँ।"

उन्होंने कहा — "अल्लाह की क़सम! हम नहीं प्यार करते।"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जब अल्लाह तआला तुम लोगों के दिलों से अपनी रहमत को खींच ले तो मैं क्या कर सकता हूँ।" —बुख़ारी, मुसलिम

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अपने बच्चों की ज़बान से सबसे पहले 'ला इला-ह इल्लल्लाह' कहलवाओ और मौत के समय उनको इसी कलिमे की शिक्षा दो।" —बैहक़ी

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम्हारे बच्चे जब सात साल के हो जाएँ तो उनको नमाज़ की ताकीद करो और जब दस साल के हो जाएँ तो नमाज़ में कोताही करने पर उनको सज़ा दो और उनके बिस्तर भी अलग-अलग कर दो।" —अबू दाऊद

(9) हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि०) फ़रमाते हैं, "मेरे वालिद (बाप) मुझको लेकर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास गए और कहा कि मैंने अपने इस लड़के को एक ग़ुलाम दिया।"

हुज़ूर (सल्ल०) ने पूछा — "क्या इसी तरह सब लड़कों को दिया है?"

अर्ज़ किया — "नहीं।"

तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तो फ़िर इससे भी वापस ले लो।"

दूसरी जगह कहा गया है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम-चाहते हो कि सब लड़के तुम्हारे साथ भलाई करें।"

अर्ज़ किया, "जी हाँ।"

तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "बस तो तुम भी उनके साथ एक-सा व्यवहार करो।"

— बुख़ारी, मुसलिम

(10) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने आदेश दिया — "तुम अपनी जानों, मालों और औलाद को बद-दुआ मत दो। ऐसा न हो कि क़बूल करने का समय हो तो तुम्हारी बद-दुआ क़बूल हो जाए।"

— मुसलिम

(11) अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने कहा — "अगर किसी बन्दे के लड़के की मृत्यु होती है तो अल्लाह तआला अपने फ़रिश्तों से पूछता है कि "तुमने मेरे बन्दे के लड़के की रूह क़ब्ज़ कर ली?" फ़रिश्ते कहते हैं, "जी हाँ।" तो अल्लाह तआला कहता है, "तुमने मेरे बन्दे के दिल के टुकड़े की रूह क़ब्ज़ कर ली।" फ़रिश्ते कहते हैं, "हाँ।" अल्लाह तआला फ़रमाता है, "उस समय मेरे बन्दे ने क्या कहा?" फ़रिश्ते कहते हैं, "परवरदिगार! उसने तेरी तारीफ़ की और 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' (हम अल्लाह ही के हैं और उसी के पास वापस जानेवाले है) कहा।" फिर अल्लाह तआला कहता है, "मेरे बन्दे के लिए जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम बैतुलहम्द (तारीफ़ का घर) रखो।"

— तिरमिज़ी

अच्छी औलाद

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "उसका बुरा हो, उसका बुरा हो जिसने अपने माँ-बाप के बुढ़ापे को पाया और जन्नत में दाख़िल न हुआ।"

—मुसलिम

अर्थात बुढ़ापे के समय में अधिक सेवा की ज़रूरत होती है। अगर कोई अपने बूढ़े और कमज़ोर माँ-बाप की पूरी-पूरी सेवा करके जन्नत का हक़दार न बना तो उस से बढ़कर बदक़िस्मत कोई नहीं।

(2) एक आदमी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया — "ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे अच्छे व्यवहारों का सबसे ज़्यादा हक़दार कौन है?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम्हारी माँ।" उसने कहा, "इसके बाद?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम्हारी माँ।" उसने कहा — "फिर? आपने फ़रमाया — "तुम्हारी माँ।" उसने कहा — "फिर कौन हक़दार है?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम्हारे बाप।"

—बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "बड़े गुनाहों में से एक बड़ा गुनाह माँ-बाप की आज्ञा न मानना है।" —बुख़ारी, मुसलिम

(4) एक आदमी ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा कि "ऐ अल्लाह के रसूल! औलाद पर माँ-बाप का कितना हक़ है?"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "वह तुम्हारी जन्नत और जहन्नम हैं।"

—इब्न माजा

अर्थात अगर तुम माँ-बाप की आज्ञा मानते हो और उनकी सेवा करते हो तो जन्नत के अधिकारी समझे जाओगे और इसके विपरीत यदि उनकी आज्ञा का पालन नहीं करोगे या उन्हें नाराज़ रखोगे तो नरक (जहन्नम) में अपना ठिकाना

बनाओगे।

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''बड़े गुनाहों में से यह भी है कि आदमी अपने माँ-बाप को गाली दे।''

लोगों ने पूछा — ''ऐ अल्लाह के रसूल! अपने माँ-बाप को कौन गाली दे सकता है?''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''आदमी किसी के बाप को गाली देगा तो वह उसके बाप को भी गाली देगा। वह उसकी माँ को गाली देगा तो दूसरा भी उसकी माँ को गाली देगा।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(6) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) को मक्का के रास्ते में एक देहाती मिला। उन्होंने उसको सलाम किया और जिस गधे पर वे सवार थे उसपर उसको बैठा लिया और अपनी वह पगड़ी दी जिसको अपने सिर पर बाँधा करते थे। रिवायत करनेवाले ने कहा — ''अल्लाह आपका भला करे, यह एक देहाती है, थोड़ी चीज़ से ख़ुश होनेवाला है।'' उन्होंने जवाब दिया — ''इसके बाप मेरे बाप हज़रत उमर (रज़ि०) बिन अल ख़त्ताब के दोस्त थे और मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से सुना है कि ''नेकियों में बड़ी नेकी यह है कि आदमी अपने माँ-बाप के दोस्तों के साथ अच्छा सुलूक करे।'' —हज़रत अब्दुल्लाह बिन दीनार

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास बनी सलमा का एक आदमी आया और कहा— ''ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मेरे माँ-बाप के मुझ पर कुछ ऐसे भी हक़ हैं जो उनके मरने के बाद मुझे अदा करने चाहिएँ?''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''हाँ! उनके लिए ख़ैर व बरकत की दुआ करते रहना, उनकी बख़शिश और माफ़ी के वास्ते अल्लाह से दुआ माँगना, उनका यदि किसी से कोई क़रार या वादा हुआ हो तो उसको पूरा करना, उनके ताल्लुक़ से जो रिश्ते-नाते हों उनका लिहाज़ रखना और उनका हक़ अदा करना और उनके दोस्तों की इज़्ज़त करना।'' —अबू दाऊद, इब्न माजा

(8) एक आदमी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा कि ''हुज़ूर! मैंने एक बहुत बड़ा गुनाह किया है तो क्या मेरी तौबा

क़बूल हो सकती है?'' आप (सल्ल०) ने पूछा — ''तुम्हारी माँ ज़िन्दा है?'' उसने कहा, ''माँ तो नहीं है।'' आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''तो क्या तुम्हारी कोई ख़ाला (मौसी) है?'' उसने कहा, ''हाँ, ख़ाला मौजूद है।'' आप (सल्ल०) ने फ़रमाया— ''तो उसकी सेवा और उसके साथ अच्छा व्यवहार करो। अल्लाह तआला उसकी बरकत से तुम्हारी तौबा क़बूल कर लेगा और तुम्हें माफ़ कर देगा।''
— तिरमिजी

(9) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अपने माँ-बाप की सेवा व आज्ञापालन करो, तुम्हारी औलाद तुम्हारी आज्ञा का पालन और सेवा करनेवाली होगी।''
— मुअज्जम अवसत लित्तबरी

(10) अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जो अपने बाप को छोड़कर (अपने आपको) किसी और से मनसूब करे, जबकि वह जानता हो कि यह मेरा बाप नहीं है तो उसपर जन्नत हराम है।''
— बुख़ारी, मुसलिम

अर्थात अगर कोई व्यक्ति अपनी बड़ाई प्रकट करने के लिए अपने ख़ानदान को समाज के बड़े लोगों से जोड़कर बनाता है तो उसका यह काम बिलकुल ग़लत है।

(11) हज़रत असमा (रज़ि०) बिन्त अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) से रिवायत है कि मेरी माँ मेरे घर आईं। वे उस समय तक ईमान नहीं लाई थी। मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा — ''मेरी माँ आई हैं और वे मुझसे अच्छे व्यवहार की उम्मीद करती हैं। क्या मैं उनके साथ ताल्लुक़ रख सकती हूँ?''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''हाँ तुम अपनी माँ के साथ ताल्लुक़ रख सकती हो।''
— बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा रिश्तेदार

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो अपनी रोज़ी में कुशादगी और अपनी उम्र में तरक़्क़ी चाहता हो तो वह रिश्ते-नातों को जोड़े।" (अर्थात रिश्तेदारों के हक़ अदा करे।) —बुख़ारी, मुसलिम

(2) एक आदमी ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से अर्ज़ किया कि — "ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे रिश्तेदार हैं। मैं उनके साथ जुड़ता हूँ तो वे कतराते हैं, मैं उनके साथ भलाई करता हूँ तो वे मेरे साथ बुराई करते हैं, मैं नरमी करता हूँ तो वे मुझसे सख़्ती से पेश आते हैं।"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जैसा तुम कह रहे हो यदि यह सच है तो तुम उनके मुँह में खाक डालते हो और अल्लाह की मदद तुम्हारे साथ बराबर रहेगी, जब तक तुम इसपर क़ायम रहोगे।" —मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "बदला उतारनेवाला, रिश्तों को जोड़नेवाला नहीं है। रिश्तों को जोड़नेवाला वह व्यक्ति है कि उसके साथ रिश्तों को तोड़ा जाए और वह जोड़े।" —बुख़ारी

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "रिश्तों को तोड़नेवाला (रिश्तेदारों के साथ बुरा व्यवहार करनेवाला) जन्नत में न जाएगा।"

—बुख़ारी, मुसलिम

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तीन आदमी जन्नत के हक़दार होंगे (उनमें से एक) — वह व्यक्ति है जो हर मुसलिम रिश्तेदार के लिए रहमदिल और नर्म दिल हो।" —मुसलिम

(6) एक अन्य जगह अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — "रिश्ता अर्श से लटका हुआ है और कहता है जो मुझे जोड़ेगा अल्लाह उसको जोड़ेगा और जो मुझे काटेगा अल्लाह उसको काटेगा।" —बुख़ारी, मुसलिम

(7) एक आदमी ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से मालूम किया, ''मुझपर सेवा और अच्छे व्यवहार का सबसे ज़्यादा हक़ किसका है?''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''माँ-बाप के बाद जो तुम्हारे क़रीबी रिश्तेदार हों, फिर जो उनके बाद क़रीबी रिश्तेदार हों।'' —बुख़ारी मुसलिम

अच्छा पड़ोसी

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "ख़ुदा की क़सम वह मोमिन नहीं, ख़ुदा की क़सम उसमें ईमान नहीं, ख़ुदा की क़सम वह ईमानवाला नहीं।"

सहाबा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया — "ऐ अल्लाह के रसूल! कौन?"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिसकी शरारतों से उसका पड़ोसी असुरक्षित (ग़ैरमहफ़ूज़) हो।" —बुख़ारी, मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान रखता हो वह अपने पड़ोसी को तकलीफ़ न दे।"

—बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज़रत अबू ज़र (रज़ि०) से फ़रमाया : "जब तुम कोई सालन पकाओ तो शोरबा (रस) ज़्यादा कर दिया करो और अपने पड़ोसी का ख़याल रखो।" —मुसलिम

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — "मुसलमान औरतो! अपनी पड़ोसन के लिए किसी तोहफ़े को हक़ीर (छोटा) न समझो चाहे वह बकरी का एक खुर ही क्यों न हो।" —बुख़ारी

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "मोमिन ऐसा नहीं होता कि ख़ुद तो पेट भरकर खाए और उसका पड़ोसी जो उसके साथ में रहता हो, भूखा रहे।" —मिशकात

(6) किसी ने अल्लाह के नबी (सल्ल०) से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे दो पड़ोसी हैं, मैं किसको उपहार भेजूँ?"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया— "जिसका दरवाज़ा तुमसे अधिक क़रीब हो।"

—बुख़ारी

(7) एक बार अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''पड़ोसी के हक़ तुमपर ये हैं : यदि वह बीमार हो जाए तो उसकी इआदत (स्वास्थ्य का हालचाल पूछो) तथा देखभाल करो, यदि मर जाए तो उसके जनाज़े के साथ जाओ; यदि वह क़र्ज़ माँगे तो (अपनी हैसियत के अनुसार) उसको क़र्ज दो, अगर वह बुरा काम कर बैठे तो उसे छिपाओ, यदि उसे कोई नेमत मिले तो उसको मुबारकबाद दो, अगर कोई मुसीबत पड़े तो ताज़ियत (सांत्वना) करो, अपनी इमारत उसकी इमारत से इस तरह बुलन्द न करो कि उसके घर की हवा बन्द हो जाए और तुम्हारी हांडी (खाना पकाने का बर्तन) की महक उसके लिए तक़लीफ़देह न हो (अर्थात इसका ध्यान रखो कि तुम्हारी हांडी की महक उसके घर तक न जाए) सिवाय इसके कि जो कुछ तुम पका रहे हो उसमें से कुछ उसके घर भी भेज दो।''

— मुअजम कबीर तबरानी

अच्छा शौहर

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया— ''मुसलमानों में उस आदमी का ईमान ज़्यादा कामिल (मुकम्मल) है, जिसका अख़लाक़ व व्यवहार (सबके साथ) बहुत अच्छा हो। और (विशेष रूप से) बीवी के साथ जिसका व्यवहार नरमी व मुहब्बत का हो।''

— तिरमिज़ी

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''मोमिन मर्द मोमिन औरत से नफ़रत न करे। अगर उसकी एक आदत नापसन्द है तो दूसरी आदत ख़ुश कर सकती है।''

— मुसलिम

(3) ख़ुतबा हिज्जतुल विदाअ में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने यह आदेश दिया है कि ''लोगो! अपनी बीवियों के बारे में अल्लाह से डरो। तुमने उनको अल्लाह की पनाह के साथ अपने अक़्द में लिया है और उसी अल्लाह के कलिमे और हुक्म से वे तुम्हारे लिए हलाल हुई हैं। तुम्हारा उनपर यह हक़ है कि जिसका (घर में आना और) तुम्हारे बिस्तरों पर बैठना तुम्हें नापसन्द हो वे उसको आकर वहाँ बैठने का मौक़ा न दें। अगर वे ऐसी ग़लती करें तो उनको (आगाही के तौर पर) तुम सज़ा दे सकते हो जो ज़्यादा सख़्त न हो और तुम्हारे ज़िम्मे मुनासिब तरीक़े पर उनके खाने-कपड़े (आदि ज़रूरी चीज़ों) की व्यवस्था करनी है।''

— मुसलिम

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा गया कि ''हमारी बीवियों का हमपर क्या हक़ है?''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जब तुम खाओ तो उनको भी खिलाओ, जब तुम पहनो तो उनको भी पहनाओ और उनके मुँह पर न मारो और उन्हें ग़ालियाँ न दो और उनको न छोड़ो मगर घर में।''

— अबू दाऊद

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अल्लाह तआला हर

ज़िम्मेदार व्यक्ति से सवाल करेगा कि उसने अपने हक़ और ज़िम्मेदारी की सुरक्षा भी की थी या उनको बर्बाद कर दिया। यहाँ तक कि बाल-बच्चोंवाले आदमी से पूछा जाएगा कि उसने अपने बाल-बच्चों के हक़ पूरे-पूरे अदा किए थे या नहीं।''

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा — ''जिस व्यक्ति की दो बीवियाँ हों और वह उनमें इनसाफ़ न करे तो क़ियामत के दिन उसका ऊपर का धड़ झड़ा हुआ होगा, यानी न होगा।'' — तिरमिज़ी, अबू दाऊद

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) को बहुत याद करते थे और जब कोई बकरी ज़िब्ह (ज़बह) करते तो उसका कोई टुकड़ा उनकी सहेलियों को भेजते और हज़रत आइशा (रज़ि०) अकसर कहतीं कि क्या आप (सल्ल०) की दुनिया में हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) के अलावा और कोई बीवी नहीं है, तो आप (सल्ल०) फ़रमाते कि वे ऐसी थीं और ऐसी थीं, मुझे अल्लाह ने उन्हीं से औलाद दी।'' — बुख़ारी, मुसलिम

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''तुम पाकदामनी के साथ रहो, तुम्हारी औरतें पाकदामन रहेंगी।'' — मुअजम औसत लित्तबरानी

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''लोगो! बीवियों के साथ व्यवहार के बारे में मेरी वसीयत मानो कि अल्लाह की उन बन्दियों के साथ अच्छा सुलूक करो, नरमी और आदर-सत्कार का बरताव रखो। (उनकी मिसाल पसली की है), यदि तुम उस टेढ़ी पसली को बिलकुल सीधा करने की कोशिश करोगे तो वह टूट जाएगी और अगर उसे यूँ ही अपने हाल पर छोड़ दोगे तो फिर वह हमेशा वैसी ही रहेगी।'' — बुख़ारी, मुसलिम

अर्थात बीवी के साथ कठोरता का व्यवहार उसके स्वभाव की स्वाभाविक टेढ़ को दूर नहीं कर सकता और न तो उसके हाल पर उसे छोड़ देना ही अच्छा है, बल्कि उसकी मामूली ग़लतियों को नज़रअन्दाज़ करते हुए उसके साथ दिलदारी के सुलूक से उसका सुधार किया जा सकता है।

अच्छी बीवी

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "दुनिया एक पूँजी है और उसकी सबसे अच्छी दौलत नेक बीवी है।" —मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा — "क्या मैं तुम्हें ऐसे ख़ज़ाने की जानकारी न दूँ जो सबसे अच्छा है। वह नेक औरत है कि जब उसका शौहर उसकी तरफ़ देखता है तो वह उसे ख़ुश कर देती है और हर काम में जो वह कहे उसका कहा मानती है। जब वह बाहर जाता है तो उसके घर की हिफ़ाज़त करती है।"

—अबू दाऊद

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जब औरत मर जाए और उसका शौहर उससे राज़ी हो तो वह जन्नत में दाख़िल होगी।" —तिरमिज़ी

(4) अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — "औरत जब पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़े और रमज़ान के महीने में रोज़े रखे और अपनी शर्म व आबरू की हिफ़ाज़त करे और शौहर की आज्ञाकारी रहे तो फिर (उसे हक़ है कि) जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे उसमें दाख़िल हो।" —हिलिया अबू नुऐम

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "किसी औरत के लिए जाइज़ नहीं कि उसका शौहर मौजूद हो और वह उसकी इजाज़त के बिना नफ़्ल के रोज़े रखे और उसकी इच्छा के बिना दूसरों को उसके घर में बुलाए।"

—बुख़ारी, मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "कोई औरत अपने शौहर के सामने किसी औरत की शक्ल व सूरत का ऐसा नक़्शा न खींचे और ऐसी तारीफ़ न करे कि मानो वह उसे देख रहा है।" —बुख़ारी, मुसलिम

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जब शौहर अपनी बीवी को अपने पास बुलाए और वह इनकार कर दे, फिर उसका शौहर ग़ुस्से की हालत में रात गुज़ार दे तो सुबह तक फ़रिश्ते उस औरत पर लानत करते हैं।"

—बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा उस्ताद (शिक्षक)

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि " दो आदमी रश्क के क़ाबिल हैं। उनमें से एक वह आदमी है जिसे अल्लाह तआला ने इल्म दिया है। वह उस इल्म के अनुसार लोगों में फ़ैसला करता है और (उनको इल्म) सिखाता है।" —बुख़ारी, मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "इनसान के मरते ही उसके अमल ख़त्म हो जाते हैं। लेकिन तीन चीज़ें बाक़ी रहती हैं। उनमें से एक वह इल्म (ज्ञान) है जिससे लोगों को फ़ायदा पहुँचता है।" —मुसलिम

(3) हज़रत आइशा (रज़ि०) बयान करती हैं कि "अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हम लोगों को ऐसे ही काम करने का आदेश देते थे जिसे वे स्वयं कर सकते हों और जो उनके बस में होता हो।" —बुख़ारी

इससे यह हिदायत मिलती है कि शागिर्द को उसकी ताक़त से ज़्यादा तालीम देने की कोशिश न करें।

(4) हज़रत मुआविया बिन हकम सलमी (रज़ि०) कहते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ नमाज़ पढ़ रहा था कि इतने में एक व्यक्ति को छींक आई, मैंने **यरहमुकल्लाह** कह दिया। लोगों ने मुझपर नज़र डाली और चुप हो जाने को कहा। मैं चुप हो गया। जब हुज़ूर (सल्ल०) नमाज़ पढ़ चुके तो आप (सल्ल०) ने न मुझे डाँटा न मारा और न बुरा-भला कहा - - सिर्फ़ इतना फ़रमाया - - - "यह नमाज़ है, इसमें बातचीत मुनासिब नहीं है।" —मुसलिम

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "इल्म सिखाओ और सख़्ती न करो। उस्ताद (शिक्षक) सख़्ती करनेवाले से बेहतर होता है।"

—बैहक़ी

(6) हज़रत मालिक बिन हवैरिस (रज़ि०) ने फ़रमाया — "हम कुछ हमउम्र नौजवान दीन का इल्म प्राप्त करने के लिए हुज़ूर (सल्ल०) के पास आए। यहाँ हम बीस दिन रहे। नबी (सल्ल०) बड़े रहमवाले और नरम मामला करनेवाले थे।" —बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा विद्यार्थी

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो व्यक्ति इल्म की तलाश में रास्ता तय करेगा, अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देगा।"

— मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो आदमी दीन का इल्म हासिल करने के मक़सद से घर से निकले तो जब तक वह घर वापस न आ जाएगा, उसका यह समय अल्लाह के रास्ते में गिना जाएगा।" — तिरमिज़ी

(3) अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिस व्यक्ति ने वह इल्म जिससे अल्लाह की ख़ुशी हासिल की जाती है, दुनिया के फ़ायदे के लिए सीखा तो क़ियामत के दिन वह व्यक्ति जन्नत की ख़ुशबू न पाएगा।" — अबू दाऊद

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिस आदमी ने इल्म को इस मक़सद से हासिल किया कि वह उसके द्वारा आलिमों से बहस-मुबाहसा करे या लोगों से झगड़े या लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जोह (आकृष्ट) करे तो अल्लाह उसको आग में दाख़िल करेगा।" तिरमिज़ी, इब्न माजा

अर्थात इल्म हासिल करनेवाले ऐसे आदमी को दोज़ख़ की आग से डराया गया है जिसकी शिक्षा का मक़सद दूसरों पर अपनी बड़ाई जताना हो, चाहे वह आलिम हो या आम लोगों में से हो।

अच्छा मेज़बान

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जिसका ईमान अल्लाह और आख़िरत के दिन पर हो वह अपने मेहमान की ख़ातिर करे।''

—बुख़ारी, मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जो आदमी अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो वह अपने मेहमान की इज़्ज़त करे और उसका इनाम दे।''

हमने पूछा, ''ऐ अल्लाह के रसूल! उसका इनाम क्या है?''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''एक रात अच्छी ख़ातिरदारी करे। और मेहमानी तीन दिन की है, अगर उससे ज़्यादा करे तो सदक़ा है।''

—बुख़ारी, मुसलिम

(3) एक आदमी ने हुज़ूर (सल्ल०) की दावत की। आप (सल्ल०) के लिए खाना तैयार किया। रसूल (सल्ल०) को मिलाकर पाँच आदमी थे। जब आप (सल्ल०) मेज़बान के यहाँ जाने लगे तो एक आदमी और भी आप (सल्ल०) के साथ हो गया। जब आप (सल्ल०) मेज़बान के दरवाज़े पर पहुँचे तो आप (सल्ल०) ने उससे कहा — ''यह आदमी मेरे साथ आए हैं, तुम्हारी ख़ुशी हो तो उनको रोक लो, वरना वापस हो जाएँ।''

उन्होंने कहा — ''ऐ अल्लाह के रसूल! मैं इनको भी इजाज़त देता हूँ।''

—बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा मेहमान

(1) नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अगर तुम्हें बकरी के पायों की दावत में बुलाया जाए तो उस दावत को क़बूल कर लिया करो।" —बुख़ारी

अर्थात दावत कितनी ही मामूली हो उसे ज़रूर क़बूल करना चाहिए। वरना दावत देनेवाले के ख़ुलूस व मुहब्बत को ठेस लगेगी।

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया— "मुसलमान के लिए जाइज़ नहीं है कि वह अपने भाई के यहाँ इतना ठहरे कि उसको गुनाहगार कर दे।"

लोगों ने पूछा कि "ऐ अल्लाह के रसूल! गुनाहगार कैसे करेगा?"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "उसके पास इस क़द्र ठहरे कि उसकी ख़ातिरदारी के लिए कुछ न रहे।" —मुसलिम

खाने से फ़ारिग़ होने के बाद मेहमान यह दुआ पढ़े —

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ فَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ ۔

अल्लाहुम-मा बारिक लहुम फ़ीमा र-ज़क़-तहुम फ़ग़फ़िर लहुम वर हमहुम ।

(ऐ अल्लाह! इनकी रोज़ी में, जो तूने इन्हें दी है, बरकत दे और इन्हें बख़्श दे और इनपर दया कर।) —मुसलिम

अच्छा मुहसिन (एहसान करनेवाला)

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''तीन आदमियों से अल्लाह तआला क़ियामत के दिन न बात करेगा, न उनकी तरफ़ देखेगा, न उनको पाक करेगा, बल्कि उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। (उनमें से एक) एहसान जतानेवाला है।''
— मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जो आदमी अपनी दी हुई चीज़ वापस लेता है तो उसकी मिसाल उस कुत्ते की-सी है जो क़ै करके फिर चाट लेता है।''
— बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा क़र्ज़ देनेवाला

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिस आदमी को यह बात पसन्द हो कि अल्लाह तआला उसे क़ियामत के दिन ग़म और घुटन से बचाए तो उसे चाहिए कि तंगदस्त क़र्ज़दार को मुहलत दे या क़र्ज़ का बोझ उसके ऊपर से उतार दे। (यानी क़र्ज़ माफ़ कर दे)।" —मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अगर क़र्ज़दार कहे कि तुम अपना क़र्ज़ अमुक ख़ुशहाल आदमी से ले लो (वह क़र्ज़ अदा कर देने के लिए तैयार है) तो बिना कारण क़र्ज़दार के सिर पर सवार न रहना चाहिए। (क़र्ज़ देनेवाले को चाहिए कि) उसकी यह बात मान ले और जिसका उसने हवाला दिया है उससे जाकर ले ले।" —बुख़ारी, मुसलिम

नोटः यदि क़र्ज़दार कहे कि फ़लाँ (अमुक) आदमी से मेरा क़रार हो गया है, वह मेरा क़र्ज़ अदा कर देगा। उससे जाकर ले लो। तो क़र्ज़ देनेवाले को इस बात पर ज़िद न करनी चाहिए कि नहीं मैं तो तुमसे ही लूँगा।

अच्छा क़र्ज़दार

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''वह व्यक्ति जिसने ख़ुदा की राह में जान दी हो, उसका हर गुनाह माफ़ हो जाएगा सिवाय क़र्ज़ के।

—मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अदा करने की सामर्थ्य रखनेवाले क़र्ज़दार का क़र्ज़ अदा करने में टाल-मटोल करना ज़ुल्म है।''

—बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, — ''क़र्ज़ अदा कर सकनेवाले का (क़र्ज़ अदा करने में) टाल-मटोल करना उसकी आबरू और उसकी सज़ा को हलाल कर देता है।''

—अबू दाऊद

अर्थात यदि कोई क़र्ज़दार सामर्थ्य रखने के बावजूद क़र्ज़ अदा करने में टाल-मटोल करता है तो क़र्ज़ देनेवाले के लिए उसे अपमानित करना जाइज़ हो जाता है और यदि इस्लामी हुकूमत हो तो उसको सज़ा भी दी जा सकती है।

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक नौउम्र ऊँट किसी से उधार लिया। फिर आप (सल्ल०) के पास ज़कात के कुछ ऊँट आए तो आप (सल्ल०) ने रावी (हज़रत अबू राफ़े रज़ि०) से फ़रमाया — ''उस आदमी को एक नौउम्र ऊँट दे दो।''

रावी ने कहा — ''इन ऊँटों में केवल एक ऊँट है जो बहुत अच्छा है और सात साल की उम्र का है।''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''वही उसे दे दो। इसलिए कि बेहतरीन आदमी वह है जो बेहतरीन ढंग से क़र्ज़ अदा करता हो।''

—मुसलिम

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''यह दुआ पढ़ते रहो और

कोशिश करते रहो तो अल्लाह तआला तुम्हारा क़र्ज अदा फ़रमा देगा —

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

अल्ला हुम्-मकफ़िनी बि हलालि-क अ़न हरामि-क, व अग़्निनी बि फ़ज़्लि-क अ़म्मन सिवा-क ।

(ऐ अल्लाह! मुझे अपनी हलाल रोज़ी देकर हराम रोज़ी से बचा ले और अपने फ़ज़्ल व करम से मुझे अपने मासिवा से बेनियाज़ कर दे।)

— तिरमिज़ी, मुसनद अहमद

अच्छा ताजिर (व्यापारी)

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "यदि ख़रीद-फ़रोख़्त करनेवाले सच बोलें तो उनकी सौदागरी में बरकत दी जाएगी और अगर झूठ बोलें तो उनकी सौदागरी में बरकत को ख़त्म कर दिया जाएगा।"

— रियाज़ुस्सालिहीन

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "क़सम खाकर सौदा बेचनेवाले का सौदा तो बिक जाता है लेकिन उसकी कमाई की बरकत भी चली जाती है।" — बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जब तुम किसी को मसजिद में ख़रीदते-बेचते देखो तो कहो कि अल्लाह तेरी तिजारत में फ़ायदा न दे।" — तिरमिज़ी

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "यह जाइज़ नहीं है कि कोई व्यक्ति किसी चीज़ को बेचे, मगर यह कि जो कुछ उसके अन्दर ऐब है, उसे बयान कर दे।" — मुन्तक़ी

यानी अच्छा ताजिर वही है कि जो चीज़ें वह बेच रहा है उसमें यदि कोई खोट मौजूद है तो उसे ख़रीदार पर ज़ाहिर कर दे।

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "वह आदमी जो ज़रूरत की चीज़ों को नहीं रोकता, बल्कि समय पर बाज़ार में लाता है तो वह अल्लाह की मेहरबानी का हक़दार है और उसे अल्लाह रोज़ी देता है। और वह आदमी जो नाजाइज़ जमाख़ोरी करता है, वह लानत का हक़दार है।" — इब्न माजा

यानी जमाख़ोरी का मतलब यह है कि ज़रूरत की चीज़ों को ज़रूरत के बावजूद इसलिए रोके रखना और बाज़ार में न लाना कि क़ीमतें बढ़ जाएँ।

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "कितना बुरा है ज़रूरत

की चीज़ों को रोक लेनेवाला। अगर अल्लाह तआला चीज़ों के दाम सस्ता करता है तो उसे दुख होता है और अगर क़ीमतें बढ़ जाती हैं तो वह खुश होता है।''

— मिशकात

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''आमदनी और लाभ तब ही जाइज़ है कि आमदनीवाली चीज़ के नुक़सान की भी ज़िम्मेदारी आइद हो।''

— मुसनद इमाम अहमद

अच्छा इमाम

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो अल्लाह की किताब ज़्यादा पढ़नेवाला हो वह लोगों की इमामत करे। अगर क़िरअत में सब बराबर हों तो सुन्नत का ज़्यादा जाननेवाला इमामत करे। यदि सुन्नत में सब बराबर हों तो जो हिजरत में मुक़द्दम (आगे आनेवाला) हो और अगर हिजरत में भी सभी बराबर हों तो फिर जो उम्र में बड़ा हो वह इमामत करे। कोई किसी इमाम के असर की जगह (यानी जहाँ कोई दूसरा इमाम मौजूद हो) इमामत न करे और उसके घर में उसकी इज़्ज़त की जगह पर न बैठे, जब तक कि वह इजाज़त न दे।" — मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जब लोगों के साथ नमाज़ पढ़ो तो नमाज़ हल्की कर दो। इसलिए कि उनमें कमज़ोर भी हैं, बीमार भी हैं और बूढ़े भी हैं। और जब अकेले पढ़ो तो जितनी चाहो लम्बी कर दो।"

— बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा हाकिम

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "किसी अमीर (हाकिम) के हवाले मुसलमानों का कोई काम हो और वह उनके लिए भलाई और कल्याण की फ़िक्र न करे तो वह उनके साथ जन्नत में न जाएगा।" —मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अल्लाह तआला जिस बन्दे के सुपुर्द किसी रिआया को करे और वह उस रिआया को धोखे में रखते हुए मर जाए तो अल्लाह तआला उसपर जन्नत हराम कर देगा।"

—बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "ऐ अल्लाह! जो मेरी उम्मत के किसी काम पर हाकिम हो और उनपर सख़्ती करे तो तू भी उसपर सख़्ती कर और जो मेरी उम्मत के किसी काम पर हाकिम हो और उनसे नरमी से पेश आए तो तू भी नरमी से पेश आ।" —मुसलिम

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "इनसाफ़ करनेवाले नूर के मिम्बर पर होंगे, वे जो अपनी हुकूमत में, अपने घरों में और जो काम उनको सौंपा गया है उसमें न्याय करें।" —मुसलिम

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम्हारे सबसे अच्छे अमीर (हाकिम) वे हैं कि तुम उनसे मुहब्बत करो, वे तुमसे मुहब्बत करें। तुम उनके लिए दुआ करो, वे तुम्हारे लिए दुआ करें। और तुम्हारे बुरे अमीर वे हैं कि तुम उनसे नफ़रत रखो, वह तुमसे नफ़रत रखें और तुम उनपर लानत करो, वे तुमपर लानत करें।" —मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समुरह (रज़ि०) से फ़रमाया — "ऐ अब्दुर्रहमान! हुकूमत की इच्छा न करो। यदि तुमको बिना तलब मिल जाएगी तो तुम्हारी तलब की जाएगी और माँगने से मिली तो तुम उसके सुपुर्द कर दिए जाओगे।" —बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा महकूम (प्रजा)

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो जमाअत से अलग होकर मरा वह जाहिलियत की मौत मरा।" —मुसलिम, रियाज़ुस्सालिहीन

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "मुसलमान पर सुनना और मानना ज़रूरी है, चाहे पसन्द हो या नापसन्द हो, मगर यह कि गुनाह का आदेश दिया जाए। यदि गुनाह का आदेश दिया जाए तो न सुनो और न उसका पालन करो।" —बुख़ारी, मुसलिम

(3) जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से सुनने और मानने पर बैअत की जाती थी तो आप (सल्ल०) फ़रमा देते थे, "उन हुक्मों में जिनकी तुम्हारे अन्दर ताक़त हो।" —बुख़ारी, मुसलिम

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — "सुनो और पालन करो। चाहे तुमपर एक हबशी ग़ुलाम ही अमीर हो और उसका सिर मुनक़्क़ा की तरह हो (यानी हक़ीर और मामूली आदमी ही क्यों न हो)। —बुख़ारी

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा गया कि — "यदि हमारे हाकिम ऐसे हों जो अपना हक़ तो माँगें लेकिन हमारा हक़ न दें तो आप (सल्ल०) का क्या आदेश है?"

आप (सल्ल०) ने मुँह फेर लिया। फिर पूछा गया तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "सुनो और पालन करो। जो वे करेंगे उसके वे ज़िम्मेदार होंगे और जो तुम करोगे उसके तुम ज़िम्मेदार होगे।" —रियाज़ुस्सालिहीन

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिसने मेरा कहा माना, उसने अल्लाह का कहा माना। जिसने मेरी नाफ़रमानी की, उसने ख़ुदा की नाफ़रमानी की। जिसने अमीर की इताअत की, उसने मेरी इताअत की। जिसने अमीर की नाफ़रमानी की, उसने मेरी नाफ़रमानी की।" —बुख़ारी, मुसलिम

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "किसी अमीर की बात पसन्द न हो तो उसको चाहिए कि सब्र करे। यदि वह उसके आज्ञापालन से एक बित्ता भी निकला तो वह जाहिलियत की मौत मरा।" —बुख़ारी, मुसलिम

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिसने अमीर की तौहीन की उसको अल्लाह तआला रुसवा करेगा।" —तिरमिज़ी

अच्छा मालिक

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "वे (मेहनत करनेवाले) तुम्हारे भाई हैं। उनको ख़ुदा ने तुम्हारे मातहत किया है। अतः जिसके मातहत ख़ुदा ने उसके भाई को किया हो उसको चाहिए कि जो काम उसकी ताक़त से बाहर हो तो उसको उससे न कराए और अगर कराना ही पड़े तो फिर उसकी मदद करे।" —बुख़ारी

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इस बात से मना किया है कि "मज़दूर की मज़दूरी तय किए बिना ही उसको काम पर लगाया जाए।" —बैहक़ी

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हिदायत दी — "मज़दूर की मज़दूरी उसके पसीना सूखने से पहले अदा कर दो।" —बैहक़ी

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अल्लाह तआला का आदेश है कि तीन क़िस्म के इनसान हैं जिनसे मैं क़ियामत के दिन झगडूँगा और जिससे मैं झगडूँगा उसको परास्त करके ही छोडूँगा। (उनमें से) एक वह है जो मज़दूर से काम पूरी तरह लेता है, लेकिन उसके अनुसार उसको मज़दूरी नहीं देता।" —बैहक़ी

(5) अल्लाह के रसूल की ख़िदमत में एक आदमी आया। उसने पूछा कि "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! कितनी बार मैं अपने नौकर की ग़लती माफ़ करूँ?" आप (सल्ल०) ख़ामोश रहे। दोबारा पूछा कि "ऐ अल्लाह के रसूल! कितनी बार अपने नौकर का क़ुसूर माफ़ करूँ?"

आप (सल्ल०) ने कहा: "रोज़ाना सत्तर बार।" —तिरमिज़ी

यानी नौकर की अधिक से अधिक ग़लतियों को माफ़ किया जाए।

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उस यहूदी लड़के के पास उसके स्वास्थ्य का हाल पूछने गए जो आप (सल्ल०) की सेवा करता था। —बुख़ारी

अच्छा मज़दूर

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का इरशाद है — ''इबादत के सत्तर हिस्से हैं और उनमें सबसे ऊँचा हलाल कमाई करना है।'' — कनज़ुल उम्माल

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया— ''कोई अपनी रस्सी लेकर पहाड़ पर जाए और लकड़ी का एक बोझ अपनी पीठ पर लाद लाए, उसको बेचे। अल्लाह उसकी वजह से ज़रूरत के मुताबिक़ दे दे तो यह उसके लिए इससे अच्छा है कि वह लोगों से माँगता फिरे। लोगों की ख़ुशी पर है, दें या न दें।''

— बुख़ारी

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''किसी ने इससे अच्छा खाना कभी नहीं खाया कि आदमी अपने हाथ की मेहनत का खाए। बेशक अल्लाह के नबी हज़रत दाऊद (अलै०) अपने हाथ से काम करके खाते थे।''

— बुख़ारी

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का इरशाद — ''बेहतरीन कमाई मज़दूर की कमाई है शर्त यह है कि वह ख़ैरख़्वाही और भलाई के साथ कामवाले का काम करे।''

— मजमउज़्ज़वाइद

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''ख़ुदा को यह बात पसन्द है कि जब तुम कोई काम करो तो उसमें मज़बूती का ध्यान रखो।''

— कनज़ुल उम्माल

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — 'जब तुम कोई चीज़ बनाओ तो चाहिए कि उसे अच्छे ढंग से बनाओ।'' — तबरानी

यानी ऊपर दोनों हदीसों से यह हिदायत मिलती है कि जो काम किया जाए अच्छे ढंग के साथ और ईमानदारी के साथ किया जाए, बेकार न टाला जाए।

अच्छा प्रचारक

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अल्लाह तआला उस व्यक्ति को कामयाब करे जो मेरी बात जैसी हो वैसी पहुँचा दे। शायद सुननेवाला ज़्यादा याद रखनेवाला हो।" —तिरमिज़ी

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिससे किसी (दीनी बातों) के बारे में सवाल किया गया और उसने (जानते हुए) न बताया तो क़ियामत के दिन उसको आग की लगाम लगाई जाएगी।"

—अबू दाऊद, तिरमिज़ी

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "एक आदमी क़ियामत के दिन लाया जाएगा और आग में डाल दिया जाएगा। उसकी अंतड़ियाँ निकल पड़ेंगी। उसको इस तरह घुमाया जाएगा जैसे चक्की के चारों ओर गद्हा घूमता है। दोज़ख़वाले उसके चारों ओर जमा होंगे और कहेंगे: "ऐ फ़लाँ व्यक्ति! तू तो लोगों को नेकी का आदेश देता था और बुराई से रोकता था। वह कहेगा: हाँ, मैं लोगों को तो नेकी का आदेश देता था, लेकिन ख़ुद नेक काम नहीं करता था और दूसरों को बुराई से मना करता था, मगर मैं ख़ुद उस बुराई का करनेवाला होता था।" —बुख़ारी, मुसलिम

(4) अच्छा आलिम वह है जो लोगों को (अपनी तक़रीर और नसीहत से) अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं करता और न अल्लाह की नाफ़रमानी के लिए उन्हें छूट देता है और न अल्लाह के अज़ाब से उन्हें निडर बनाता है।

—किताबुल ख़िराज

(5) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया — "हर हफ़्ते एक बार उपदेश दिया करो। दो बार भी कर सकते हो, लेकिन तीन बार से अधिक उपदेश मत करना.........और ऐसा तो कभी न हो कि तुम लोगों के पास

पहुँचो और वे अपनी किसी बात में लीन हों और तुम अपनी नसीहत शुरू कर दो और उनकी बात काट दो। यदि तुम ऐसा करोगे तो उनके अन्दर उपदेश व नसीहत के प्रति नफ़रत पैदा कर दोगे। बल्कि ऐसे मौक़े पर ख़ामोशी इख़तियार करो और जब उनके अन्दर ख़्वाहिश देखो और वे तुमसे माँग करें तो फिर नसीहत करो। देखो! लयबद्ध और छन्दबद्ध जुमले बोलने से बचो, क्योंकि मैंने नबी (सल्ल०) और आप (सल्ल०) के सहाबा (रज़ि०) को देखा है कि वे बनावट के साथ जुमले नहीं बोलते थे।''

— बुख़ारी

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सहाबा (रज़ि०) को नाग़ा देकर उपदेश देते थे और आप (सल्ल०) ऐसा इसलिए करते थे कि कहीं लोग उकता न जाएँ।

— बुख़ारी, मुसलिम

(7) हज़रत अली (रज़ि०) ने फ़रमाया — ''आदमी की कुछ इच्छाएँ और दिलचस्पियाँ होती हैं, किसी समय वे बात सुनने के लिए तैयार रहते हैं और किसी समय उस बात को सुनने के लिए तैयार नहीं रहते। तो लोगों के दिलों में उनकी दिलचस्पियों के अन्दर से दाख़िल हो और उस समय अपनी बात कहो जबकि वे सुनने को राज़ी हों। इसलिए कि दिल का हाल यह है कि जब उसको किसी बात पर मजबूर किया जाता है तो वह अन्धा हो जाता है (और बात मानने से इनकार कर देता है)।

— किताबुल ख़िराज

(8) रसूल (सल्ल०) जब कोई बात कहते तो तीन बार दुहराते (जब ज़रूरत समझते) जिससे वह बात लोगों की समझ में अच्छी तरह आ जाए।''

— बुख़ारी

अच्छा माँगनेवाला

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "माँगना तीन आदमियों के अलावा किसी के लिए जाइज़ नहीं —

(i) ऐसा आदमी जो किसी बात का ज़िम्मेदार हो तो उसको माँगना जाइज़ है, मगर उतना ही जो उसकी ज़रूरत के लिए काफ़ी हो।

(ii) ऐसा व्यक्ति जिसको कोई बड़ा हादसा या माली नुक़सान हुआ हो तो उसको इतना माँगना जाइज़ है जिसमें गुज़र-बसर कर सके (या यह फ़रमाया कि) ज़िन्दगी बसर करने का सामान उसको मिल जाए।

(iii) ऐसा इनसान जिसको सख़्त ज़रूरत पड़ जाए और उसकी क़ौम के तीन भरोसेमंद आदमी कहें कि यह बहुत ज़रूरतमंद है तो उसको माँगना जाइज़ है।

इनके अलावा हर आदमी पर (माँगना) हराम है, जो माँगकर खाए वह हराम खा रहा है।''

— रियाज़ुस्सालिहीन

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "वह मिसकीन नहीं है जो लोगों के पास एक लुक़मा (कौर) या दो लुक़मे, एक खजूर या दो खजूरों के लिए आए। मिसकीन वह है जिसके पास इतना न हो जो उसके लिए काफ़ी हो और लोगों को उसके हाल की खबर भी न हो कि उसको सदक़ा दें और वह आम लोगों में खड़ा होकर शर्म व लज्जा की वजह से माँग भी न सके।''

— बुख़ारी, मुसलिम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मुझे कुछ देते तो मैं कहता कि मुझसे अधिक जो मुहताज हो उसको दीजिए। आप (सल्ल०) फ़रमाते, "इसको ले लो। जब तुम्हारे पास ऐसा माल आए जिसमें तुम्हारा दिल नहीं लगा था और न तुमने माँगा था, तो उसको ले

लिया करो और उसको बढ़ाओ। अपने इस्तेमाल में लाओ चाहे सदक़ा करो। और जो ऐसा न हो तो उसके पीछे अपना दिल न लगाओ।''

हज़रत सालिम (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) किसी से कुछ नहीं माँगते थे, मगर जो दे देता था उसको वापस भी नहीं करते थे।

—बुख़ारी, मुसलिम

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जो व्यक्ति लोगों से जमा करने के लिए माँगता है, वह आग की चिनगारी माँगता है, उसको अधिकार है कि वह ज़्यादा चिनगारियाँ जमा कर ले या कम।'' —मुसलिम

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''किसी को कोई फ़ाक़ा करना पड़े तो यदि वह उस फ़ाक़े को लोगों के सामने कहे तो उसका फ़ाक़ा ख़त्म न होगा और यदि अल्लाह के सामने पेश करेगा तो उसको जल्द या देर रोज़ी दी जाएगी।'' —अबू दाऊद, तिरमिज़ी

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''लग-लिपटकर न माँगो। ख़ुदा की क़सम अगर तुममें से कोई मुझसे माँगेगा और मैं उसको नाराज़ होकर दूँगा तो उसमें बरकत न होगी।'' —मुसलिम

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''इस तरह ख़ुदा से हरगिज़ न माँगो कि ऐ ख़ुदा! यदि तू चाहे तो बख़्श दे। ऐ अल्लाह! यदि तू चाहे तो मुझपर दया कर। तुमको मज़बूती के साथ दुआ करनी चाहिए। अल्लाह को कोई चीज़ बुरी नहीं मालूम होती।'' —बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा साथी

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "मोमिन वह है जो अपने भाई के लिए वही चाहे जो अपने लिए चाहता है।" —बुख़ारी, मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो किसी मरीज़ की देखभाल करता है या अल्लाह की ख़ुशी के लिए किसी मुसलमान भाई से मुलाक़ात करने चलता है तो एक पुकारनेवाला पुकारता है, 'तू मुबारक है, तेरा चलना मुबारक है, तूने जन्नत में अपनी जगह बना ली'।" —तिरमिज़ी

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अल्लाह तआला क़ियामत के दिन कहेगाः मेरी बड़ाई की वजह से जो आपस में मुहब्बत करते थे वे कहाँ हैं? आज मैं उनपर अपना साया करूँगा और आज मेरे साए के अलावा कोई साया नहीं है।" —मुसलिम

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अच्छे साथी और बुरे साथी की मिसाल ऐसी है, जैसे मुश्क (कस्तूरी) उठानेवाले और धौंकनी फूँकनेवाले की। मुशक उठानेवाला या तो तुमको कुछ देगा या तुम उससे ख़रीदोगे या उसकी मुश्क ही पाओगे और धौंकनीवाला या तो तुम्हारे कपड़े जलाएगा या उससे बदबू ही पाओगे।" —बुख़ारी, मुसलिम

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जब आदमी अपने किसी मुसलमान भाई से मुहब्बत करे तो उसको चाहिए कि वह उससे बता दे कि मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ।" —अबू दाऊद, तिरमिज़ी

अर्थात यदि किसी को यह मालूम हो जाए कि फ़लाँ आदमी मुझसे मुहब्बत करता है या मेरा ख़याल रखता है तो उसका मानसिक प्रभाव यह होता है कि उसके दिल में उस आदमी का एहतिराम ख़ुद ब ख़ुद पैदा हो जाता है।

(6) हज़रत अली (रज़ि०) ने फ़रमाया — "अपने दोस्त से दोस्ती में नरमी

(मध्यम मार्ग) इख़तियार करो। हो सकता है कि वह किसी समय तुम्हारा दुश्मन बन जाए। उसी तरह दुश्मन से दुश्मनी का बर्ताव करने में भी नरमी (सन्तुलित मार्ग) इख़तियार करो। हो सकता है कि किसी दिन वह तुम्हारी दोस्ती का दम भरने लगे।''
—अल अदबुल मुफ़रद

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सामने किसी आदमी की उसके मुँह पर तारीफ़ की गई तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''तुमने अपने दोस्त की गर्दन तोड़ दी।'' इस बात को आप (सल्ल०) ने कई बार दुहराया। फिर फ़रमाय : ''यदि तारीफ़ करना ज़रूरी ही हो तो यूँ कहो कि मेरा उसके साथ ऐसा और ऐसा गुमान है।''
—बुख़ारी, मुसलिम

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है। अतः आदमी को देख लेना चाहिए कि किससे दोस्ती करता है।''
—अबू दाऊद, तिरमिज़ी

यानी इनसान अपने दोस्त का तौर-तरीक़ा, अख़लाक़ व आदत यहाँ तक कि अक़ीदा व मज़हब तक अपना लेता है। इसलिए दोस्तों के चुनाव में बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए।

(9) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''आदमी (क़ियामत के दिन) उसके साथ होगा जिसको चाहता है।''
—बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा मुसाफ़िर

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अगर लोगों को अकेले सफ़र करने की वे ख़राबियाँ मालूम हो जाएँ जो मैं जानता हूँ तो कोई सवार कभी रात में अकेले सफ़र न करे।'' —बुख़ारी

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की आदत थी कि जब आप (सल्ल०) किसी सफ़र को रवाना होते और वापस आ जाते तो दो रकअत शुकराने की नफ़्ल नमाज़ पढ़ते थे।

(3) नबी करीम (सल्ल०) ने सफ़र के दौरान साथियों के साथ अच्छा सुलूक करने की ताकीद की है।

(4) सफ़र पर रवाना होनेवाले के हक़ में यह कहें —

اَسْتَوْدِعُكُمُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَا تَضِیْعُ وَدَائِعُهٗ

''असतौदिउ़कुमुल्ला-हल्लज़ी ला तज़ीउ़ वदाइउ़हू।''

(मैं तुम्हें अल्लाह को सौंपता हूँ जिसके पास अमानतें नष्ट नहीं होतीं।)

—अबू दाऊद, मुसनद अहमद

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सफ़र पर रवाना होते समय यह दुआ करते थे —

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِیْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰی وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰی، اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ ، وَالْخَلِيْفَةُ فِی الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْٓءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْاَهْلِ .

"अल्लाहुम-म इन्ना नसअलु-क फ़ी स-फ़-रिना हाज़ा, अल बिर-र वत- तक़वा, व मिनल अ़-मलि मा तरज़ा। अल्लाहुम्-म हव्विन अ़लैना स-फ़-र-ना हाज़ा व अतविअ़न्ना बुअ़दहू, अल्लाहुम-म अन्तस्साहिबु फ़िस स-फ़-रि वल ख़लीफ़तु फ़िल अहलि, अल्लाहुम-म इन्नी अऊ़ज़ु बि-क मिन वअ़साइस-स-फ़-रि, व काबतिल मनज़रि व सूइल मुन-क़लबि फ़िल मालि वल अहलि।"

(ऐ अल्लाह अपने इस सफ़र में हम तुझसे नेकी, परहेज़गारी और पसन्दीदा अमल की दरख़्वास्त करते हैं। मालिक! हमारे इस सफ़र को आसान कर दे। इसकी दूरी को कम कर दे। ऐ अल्लाह! तू ही सफ़र में साथी और घरवालों के लिए हमारा क़ायम मुक़ाम है। ऐ अल्लाह! मैं सफ़र की परेशानी से, तकलीफ़देह दृश्यों से और घरबार को बुरी हालत में आकर देखने से तेरी पनाह चाहता हूँ।)

— मुसलिम, तिरमिज़ी

(6) जब सवारी पर बैठें तो यह दुआ पढ़ें —

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ۔

"अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी सख़्ख़र-लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़-रनीन, व इन्ना इला रब्बिना लमुन-क़लिबून।"

(अल्लाह की तारीफ़ और शुक्र है जिसने इसे हमारे बस में कर दिया जबकि हम इसे बस में करनेवाले न थे ओर हमें अपने रब की तरफ़ ही लौटकर जाना है।)

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) जब किसी बुलन्दी पर चढ़ते तो '**अल्लाहु अकबर**' कहते और उतरते तो '**सुबहानल्लाह**' कहते। — बुख़ारी

(8) समुन्द्री सफ़र शुरू करते समय यह दुआ पढ़ें —

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرِیْهَا وَمُرْسٰهَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۔

"बिसमिल्लाहि मजरेहा व मुरसाहा इन-न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर-रहीम।"

(अल्लाह के नाम से इसका चलना और इसका ठहरना है। बेशक मेरा रब माफ़ करनेवाला और दया करनेवाला है।)

(9) जब किसी जगह पड़ाव डालते तो यह दुआ पढ़ते —

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ .

"अ'ऊज़ु बि कलिमातिल्ला-हित्ताम्माति मिन शर-रि मा-ख़-लक़।"

(मैं अल्लाह के मुकम्मल बोलों और कलिमात की पनाह चाहता हूँ, उस बुराई से जो उसने पैदा की।) — मुसलिम, तिरमिज़ी

(10) जब किसी बस्ती में दाख़िल हों तो यह दुआ तीन बार पढ़ें —

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهَا .

"अल्लाहुम-म बारिक लना फ़ीहा।"

(ऐ अल्लाह! यह बस्ती हमारे लिए बरकतवाली बना दे।) — तबरानी

اٰئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ .

(11) "आइबूनत्ताइबू-न, आबिदू-न लि रब्बिना हामिदून।"

(लौटनेवाले हैं, तौबा करनेवाले हैं, इबादत करनेवाले हैं, अपने रब का शुक्र करनेवाले हैं।) — मुसलिम

अच्छा ढंग अपनानेवाला

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक लड़के को देखा जिसका आधा सिर मुंडा था और आधे में बाल थे। उसे देखकर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "या तो तमाम बाल मुंडवा दो या बिलकुल न मुडंवाओ।" —अबू दाऊद

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बाल जोड़कर बढ़ानेवाली, बढ़वानेवाला, गोदनेवाली और गोदवानेवाली पर लानत की है। —बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अधिकतर सिर पर बाल रखे हैं। कभी कान की लौ से ऊँचे रखे, कभी कान की लौ तक। कभी उससे भी नीचे कन्धे तक। — शमाइल तिरमिज़ी

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मसजिद में बैठे थे। एक आदमी मसजिद में आया। उसके सिर और दाढ़ी के बाल बिखरे हुए थे। आप (सल्ल०) ने अपने हाथ से उसको इशारा किया जिसका मतलब यह था कि वह अपने सिर और दाढ़ी के बालों को ठीक कराए। चुनाँचे उसने ऐसा ही किया और फिर लौटकर आया तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "क्या यह इससे अच्छा नहीं है कि तुममें से कोई सिर के बाल बिखेरे हुए ऐसी (भयानक) दशा में आए कि लगे कि वह शैतान है।" — मुवत्ता इमाम मलिक

(5) मूँछें छटवाने, नाख़ून कटाने, बग़ल और नाफ़ के नीचे की सफ़ाई के बारे में हमारे लिए हद तय कर दी गई है कि चालीस दिन से ज़्यादा न छोड़ें। —मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, "मूंछों को .ख़ूब बारीक करो और दाढ़ी छोड़ो।" —बुख़ारी, मुसलिम

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिस इनसान के बाल हों उसको चाहिए कि वह उन बालों की क़द्र करे।" —अबू दाऊद

नोट: बालों की क़द्र यह है कि उनको धोया जाए, ज़रूरत के मुताबिक़ तेल लगाया जाए, उनमें कंघी भी की जाए।

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने चेहरे पर मारने और चेहरा दाग़ने से मना किया है। —मुसलिम

(9) हज़रत हिन्द बिन उतबा (रज़ि०) ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से फ़रमाया — "मुझे बैअत कर लीजिए।"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "मैं तुमको उस समय तक बैअत नहीं करूँगा जब तक कि तुम मेंहदी लगाकर अपने हाथों की सूरत न बदलोगी। यह दरिन्दे जैसे हाथ मालूम होते हैं।" —अबू दाऊद

अच्छा कपड़ा पहननेवाला

(1) सहाबा किराम (रज़ि०) से मुख़ातिब होकर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया— "पोशाक की सादगी ईमान की अलामतों में से एक अलामत है।"

—अबू दाऊद

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया — "जो आदमी उमदा पोशाक पहनने की सामर्थ्य के बावजूद ख़ाकसारी और तवाज़ो की वजह से उसको इस्तेमाल न करे (और सादा मामूली पोशाक ही पहने) तो अल्लाह तआला उसको क़ियामत के दिन सारी मख़लूक़ के सामने बुलाकर अधिकार देगा कि वह ईमान के जोड़ों में से जो जोड़ा भी पसन्द करे उसको पहन ले।" —तिरमिज़ी

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो इनसान दुनिया में दिखावे और शोहरत के कपड़े पहनेगा उसको अल्लाह तआला क़ियामत के दिन ज़िल्लत और रुसवाई के कपड़े पहनाएगा।" —मुसनद अहमद, अबू दाऊद

अर्थात शोहरत के कपड़े से मुराद वह लिबास है जो अपनी शान व शौकत की नुमाइश के लिए लोगों की नज़र में बड़ा बनने के लिए पहना जाए।

(4) हज़रत मलिक बिन फ़ज़िला (रज़ि०) कहते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैं बहुत मामूली और घटिया कपड़े पहने हुए था। रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जब अल्लह तआला ने तुमको माल और दौलत दी है तो फिर अल्लाह के इनाम व एहसान और उसके फ़ज़्ल व करम का असर तुम्हारे ऊपर दिखाई देना चाहिए।" —मुसनद अहमद, नसई

अर्थात यदि कोई इनसान केवल कंजूसी या तबीअत की लापरवाही की वजह से मामूली या उलटे-सीधे कपड़े पहनता है और अपनी हैसियत का ध्यान नहीं रखता तो इस बात को अच्छी नज़र से नहीं देखा गया है।

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "रेशम की पोशाक मेरी

उम्मत के मर्दों पर हराम है और औरतों पर हलाल है।'' —तिरमिज़ी

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उन मर्दों पर लानत फ़रमाई है जो औरतों का लिबास अपनाते हैं और उन औरतों पर लानत की है जो मर्दों की पोशाक पहनती हैं। —अबू दाऊद

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''वे औरतें जहन्नमी हैं जो कपड़े पहनकर भी नंगी रहती हैं।'' —रियाज़ुस्सालिहीन

अर्थात मक़सद यह है कि ऐसे बारीक कपड़े न इस्तेमाल किए जाएँ जिनको पहनकर शरीर का हर अंग दिखाई पड़े।

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने (सफ़ेद बारीक क़िबती चादर हज़रत दहिया (रज़ि०) को देते हुए फ़रमाया — ''इसके दो टुकड़े कर लेना। एक टुकड़े का तो अपना कुरता बना लेना और दूसरा टुकड़ा अपनी बीवी को दे देना। वह उसको ओढ़नी के तौर पर इस्तेमाल कर लेगी।'' फिर जब दहिया (रज़ि०) जाने लगे तो आप (सल्ल०) ने दुबारा फ़रमाया— ''अपनी बीवी से कह देना कि वह इसके नीचे एक और कपड़ा लगा ले ताकि उसके बाल और जिस्म वग़ैरह दिखाई न दें।'' —अबू दाऊद

(9) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''मुसलमान (मर्द) का पाजामा आधी पिंडली तक होना चाहिए। कोई गुनाह व हर्ज नहीं यदि टख़नों तक हो और अगर टख़नों से नीचा हुआ तो फिर वह आग में है, और जिसने गुरूर में आकर अपना पाजामा लम्बा किया तो अल्लाह तआला उसकी तरफ़ निगाह उठाकर भी नहीं देखेगा।'' —अबू दाऊद

(10) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) और उम्मे सलमा (रज़ि०) को आदेश दिया था कि वे अपने पल्लू को एक हाथ लटके हुए रखें, (ताकि जिस्म अच्छी तरह ढका हुआ रहे)। —मुसनद अहमद

(11) प्यारे नबी (सल्ल०) ने एक ऐसे आदमी को देखकर जिसके कपड़े बहुत ही मैले थे, फ़रमाया — ''क्या इसे कोई ऐसी चीज़ नहीं मिल सकती कि जिससे अपने कपड़े साफ़ कर ले।'' —मुसनद अहमद

(12) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज़रत इब्न उमर (रज़ि०) को लाल रंग का कपड़ा पहने हुए देखा तो फ़रमाया — "इसे उतार डालो।"

— मुसनद अहमद

(13) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास एक आदमी आया और उस (के कपड़ों) पर पीला रंग नज़र आ रहा था। आप (सल्ल०) को वह बुरा मालूम हो रहा था। जब वह आदमी जाने को उठा तो आप (सल्ल०) ने अपने सहाबा (रज़ि०) से फ़रमाया — "बहुत अच्छा होगा यदि तुम उससे कह दो कि पीले रंग को छोड़ दे।"

— मुसनद अहमद

(14) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का इरशाद है — "सफ़ेद कपड़े पहना करो। यह बहुत अच्छा लिबास है। सफ़ेद कपड़ा ही ज़िन्दगी में पहनना चाहिए और सफ़ेद ही कपड़े में मुरदों को दफ़न करना चाहिए।" — तिरमिज़ी

(15) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जब कपड़ा पहना जाए तो दाहिने हिस्से से शुरू किया जाए।" — तिरमिज़ी

(16) "कपड़े उतारते समय '**बिसमिल्लाह**' कहना चाहिए ताकि जिन्न भी उसकी नग्नता (नंगापन) न देख सकें।" — हिसने हसीन

(17) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) जब कोई नया कपड़ा पहनते तो उसका नाम लेकर फ़रमाते —

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ كَسَوْتَنِيْهِ اَسْاَ لُكَ خَيْرَهٗ وَ مَاصُنِعَ لَهٗ

وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَ شَرِّمَاصُنِعَ لَهٗ .

"अल्ला हुम-म लकल हम्दु अन-त कसौ-तनीह असअलु-क ख़ैरहू व ख़ै-र मा सुनि-अ़ लहू व अऊ़ज़ु बि-क मिन शर्रिही व शर्रिमा सुनि-अ़ लहू।"

(ऐ अल्लाह! तेरा शुक्र है। तूने ही मुझे यह कपड़ा पहनाया। मैं तुझसे इसकी भलाई और जिस ग़रज़ के लिए यह बनाया गया है उसकी भलाई माँगता हूँ और तेरी पनाह चाहता हूँ इसकी बुराई से और जिस ग़रज़ के लिए यह बनाया

गया है उसकी बुराई से।) — तिरमिज़ी

(18) नए कपड़े पहनते समय यह दुआ भी पढ़ें —

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ كَسَانِىْ مَااُوَارِىْ بِهٖ عَوْرَتِىْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِىْ حَيَاتِىْ .

''अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिही औ-रती व अ-त-जम्मलु बिही फ़ी हयाती।''

(सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने मुझे ये कपड़े पहनाए, जिससे मैं अपने अंगों को छिपाता हूँ और अपनी ज़िन्दगी को हुस्न व जमाल से सुसज्जित करता हूँ।)

— तिरमिज़ी

अच्छा खाने-पीनेवाला

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''यदि तुम अल्लाह पर भरोसा करो जैसा भरोसा करने का हक़ है तो वह तुमको इस तरह रोज़ी देगा जैसे चिड़ियों को देता है। सुबह को ख़ाली पेट जाती हैं और शाम को पेट भरकर वापस आती हैं।''
— तिरमिज़ी

अर्थात भरोसे का हक़ यह है कि इनसान हाथ पर हाथ रखे बैठा न रहे, बल्कि अपनी हद तक कोशिश करे और नतीजा अल्लाह पर छोड़ दे।

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''इनसान को इतना खाना काफ़ी है कि उसकी पीठ सीधी रहे। अगर उसके बाद भी कुछ ज़रूरत है तो पेट का एक तिहाई खाने के लिए, एक तिहाई पानी के लिए और एक तिहाई साँस के लिए।''
— तिरमिज़ी

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''इस तरह (कुछ ठंडा करके) खाना ज़्यादा बरकत का सबब होता है।''
— दारमी

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सामने एक रकाबी में सरीद (एक प्रकार का खास खाना) लाया गया। आप (सल्ल०) ने लोगों से कहा कि ''खाओ, (मगर) आसपास से खाओ। बीच में से न खाओ।''
— मुसनद अहमद

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सामने कुछ खजूरें पेश की गईं। चुनांचे आप (सल्ल०) ने और सहाबा (रज़ि०) ने खाना शुरू किया। कुछ सहाबा (रज़ि०) एक साथ दो-दो खजूरें खाने लगे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''एक लुक़्मे में एक ही खजूर खाओ।''
— मुसनद अहमद

अर्थात साथवालों के मुक़ाबिले में ज़्यादा खाने की कोशिश न करना चाहिए, बल्कि सलीक़े और इनसाफ़ के साथ सबके बराबर खाना चाहिए।

(6) नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''ख़ाने से पहले और खाने के बाद मुँह-हाथ धोना बरकत का सबब है।''
— मुसनद अहमद

(7) सहाबा किराम (रज़ि०) ने पूछा कि "ऐ अल्लाह के रसूल! हम खाते हैं और संतुष्ट नहीं होते।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम शायद अलग-अलग खाते हो।" सहाबा ने फ़रमाया, "जी हाँ।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — "**बिसमिल्लाह**" (शुरू अल्लाह के नाम से) पढ़कर और सब मिलकर खाया करो, उसमें तुम्हारे लिए बरकत होगी।" —अबू दाऊद

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की आदत थी कि आप (सल्ल०) तीन उँगलियों से खाना खाते थे, फिर उनको चाट लिया करते थे। —तिरमिज़ी

(9) अगर खाने से पहले बिसमिल्लाह कहना भूल जाएँ तो (बाद में) यह पढ़ लें —

"**बिसमिल्लाहि अव्वलहू व आख़िरहू ।**"

(अल्लाह के नाम से, उसके पहले और पीछे।) —अबू दाऊद

(10) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "शैतान अपने लिए उस खाने को जाइज़ कर लेता है जिसपर अल्लाह का नाम न लिया गया हो।"
—मुसलिम

(11) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम लोग बाएँ हाथ से खाया-पिया न करो। बाएँ हाथ से शैतान खाता-पीता है।" —मसलिम

(12) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "मैं टेक लगाकर या किसी चीज़ के सहारे से बैठकर खाना नहीं खाता।" —बुख़ारी

(13) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) खाने के बाद तीनों अंगुलियाँ एक साथ नहीं चाटा करते थे, और फ़रमाते थे — "अगर तुम्हारे हाथ से लुक़मा छूट पड़ा करे तो उसको (उठाकर) साफ़ करके खा लिया करो, उसे शैतान के लिए न छोड़ा करो और रकाबी में खाना लगा हुआ न छोड़ा करो, बल्कि उसे साफ़ कर दिया करो।" और फ़रमाते थे, "तुम्हें यह ख़बर तो होती नहीं कि खाने के किस हिस्से में बरकत है। संभव है वही बरकतवाला हिस्सा हो जो रकाबी में लगा हुआ रह गया हो।" —मुसनद

(14) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने खड़े-खड़े पीने से मना किया है।
—मुसलिम

(15) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम ऊँट की तरह एक साँस में न पिया करो, बल्कि दो-दो या तीन-तीन साँसों में पिया करो और जब तुम पीने लगो तो 'बिसमिल्लाह' पढ़ के पियो और जब पी चुको और बर्तन से मुँह हटा लो तो अल्लाह की तारीफ़ और उसका शुक्र अदा करो।" — तिरमिज़ी

(16) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "(कोई चीज़ पीते समय) बर्तन में साँस न लिया करो।" — बुखारी, मुसलिम

(17) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कभी किसी खाने में ऐब नहीं निकाला। अगर पसन्दीदा हुआ तो खा लिया और नापसन्द हुआ तो न खाया और छोड़ दिया।" — बुख़ारी, मुसलिम

(18) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सोने और चाँदी के बर्तनों में खाने से मना किया। — नसई

(19) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अल्लाह तआला उस बन्दे से ख़ुश होता है जो खाना खाकर और पानी पीकर उसकी तारीफ़ करता है।" — मुसलिम

अर्थात तारीफ़ का सही तरीक़ा वह है जो नबी करीम (सल्ल०) ने बताया है कि खाने से फ़ारिग़ होकर यह दुआ पढ़ें —

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ .

"अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अतअ़मना व सक़ाना व जअ़लना मिनल मुसलिमीन।"

(सारी तारीफ़ और शुक्र उस अल्लाह के लिए है जिसने हमें खिलाया-पिलाया और हमें फ़रमाबरदारों में से बनाया।)

अच्छा मुसीबत झेलनेवाला

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जितनी सख़्त आज़माइश और मुसीबत होती है उतना ही बड़ा उसका फल होता है और ख़ुदा जब किसी गिरोह से मुहब्बत करता है तो उसको और अधिक आज़माइश में मुबतिला कर देता है। अतः जो लोग ख़ुदा की रज़ा पर राज़ी हैं, ख़ुदा भी उनसे राज़ी होता है और जो उस आज़माइश में ख़ुदा से नाराज़ हो, ख़ुदा भी उनसे नाराज़ हो जाता है।" —तिरमिज़ी

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "मुसलमान को जो मुसीबत पहुँचती है, चाहे वह किसी क़िस्म की हो — बीमार हो, रंज व ग़म हो, तकलीफ़ हो, यहाँ तक कि उसको एक काँटा भी चुभे — अल्लाह उसके बदले में उसकी ग़लतियाँ माफ़ कर देता है।" —बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "मोमिन का मामला भी ख़ूब है। यह मोमिन ही की ख़ुसूसियत है कि जब उसको ख़ुशी पहुँचती है तो शुक्र भेजता है, अतः यह उसके लिए बेहतर होता है। और जब मुसीबत पहुँचती है तो सब्र करता है, अतः यह भी उसके लिए बेहतर होता है।" —मुसलिम

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जब तुममें से कोई किसी मुसीबत में पड़ जाए तो मौत की आरज़ू न करे। यदि मजबूर हो जाए तो कहे, "ऐ अल्लाह! मुझको ज़िन्दा रख अगर ज़िन्दगी मेरे लिए बेहतर है और मुझको मौत दे अगर मौत मेरे लिए बेहतर है।" —बुख़ारी, मुसलिम

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "नौहा करने (बयान करके रोने) से क़ब्र में मुर्दे पर अज़ाब होता है।" —बुख़ारी, मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो इनसान गरेबान फाड़ता, गालों पर तमाचे मारता, जाहिलियत के तर्ज़ पर चीख़ता, चिल्लाता और

बैन करता है (यानी बयान करके रोता है), वह मेरी उम्मत में नहीं।''

— तिरमिज़ी

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जब कोई बन्दा मुसीबत पड़ने पर **'इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'** (हम ख़ुदा के हैं और उसी की तरफ़ लौटकर जानेवाले हैं) पढ़ता है तो ख़ुदा उसकी मुसीबत को दूर कर देता है। उसको अच्छे अनजाम से नवाज़ता है और उसको उसकी पसन्दीदा चीज़ उसके बदले में देता है।''

— तिरमिज़ी

अच्छी बातचीत करनेवाला

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अल्लाह तआला गाली बकनेवाले बदज़बान इनसान से नफ़रत करता है।" —तिरमिज़ी

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — (मुसलमानों में सबसे अफ़ज़ल वह है) जिस मुसलमान की ज़बान और हाथ की बुराई से लोग महफ़ूज़ रहें।" —बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम अल्लाह के ज़िक्र के अलावा ज़्यादा बात न किया करो। ज़्यादा बोलना दिल को सख़्त कर देता है और सख़्त दिल आदमी अल्लाह तआला से बहुत दूर है।" —तिरमिज़ी

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "क़ियामत के दिन मुझे सबसे ज़्यादा नापसन्द और मुझसे सबसे ज़्यादा दूर वे होंगे जो ज़्यादा बातूनी होंगे, तेज़ ज़बान होंगे, बनावटी बात करनेवाले और घमंडी होंगे।" —तिरमिज़ी

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "सच्चाई नेकी की तरफ़ ले जाती है और नेकी जन्नत में ले जाती है और बन्दा सच बोलते-बोलते अल्लाह के यहाँ बड़ा सच्चा और सत्यवादी शुमार होने लगता है। झूठ गुनाह पर उभारता है और गुनाह दोज़ख में ले जाता है। बन्दा झूठ बोलते-बोलते अल्लाह के यहाँ बड़ा झूठ बोलनेवाला लिख लिया जाता है।" —बुख़ारी, मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "आग से बचो चाहे खजूर का एक टुकड़ा ही देकर। और अगर वह भी तुम्हारे पास न हो तो अच्छी बात ही कहो।" —बुख़ारी, मुसलिम

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "चुग़लख़ोर जन्नत में न जाएगा।" —बुख़ारी, मुसलिम

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जब मैं मेराज को गया

तो एक ऐसी क़ौम के बीच से मैं गुज़रा जिसके नाख़ून ताँबे के थे। वे नाख़ून से अपने मुँह और सीनों को खुरचते थे। मैंने कहा: 'ऐ जिबरईल! ये कौन लोग हैं?' जवाब दिया कि यह वे लोग हैं जो (अपने ही जैसे) लोगों का गोश्त खाया करते थे।''

—अबू दाऊद

अर्थात ग़ीबत करते और दूसरों की इज़्ज़त से खेलते थे।

(9) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''ताना देनेवाला, लानत करनेवाला, गाली बकनेवाला और ज़बानदराज़ी करनेवाला मोमिन नहीं है।''

— तिरमिज़ी

(10) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अल्लाह तआला ने तुमको बाप-दादा की क़सम खाने से मना किया है। जिसको क़सम खाना हो वह अल्लाह की क़सम खाए वरना ख़ामोश रहे।''

— बुख़ारी, मुसलिम

(11) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''सबसे बढ़कर दोज़ख़ में जानेवाला वह है जिसके दो मुँह हों। एक के पास अपना एक मुँह लेकर जाता हो और दूसरे के पास दूसरा मुँह लेकर जाता हो।''

— बुख़ारी, मुसलिम

अर्थात दो मुँह रखनेवाले से मुराद वह इनसान है जो दोरुख़ी बातें करता है। यानी एक के पास जाता है तो उसके जैसी बातें करता है और दूसरे के पास जाता है तो उसके जैसी बातें करता है और झूठ व सच का लिहाज़ नहीं रखता।

(12) नबी (सल्ल०) बात करते समय मुस्कुराते और निहायत ख़ुशी के साथ बातचीत करते थे।

— शमाइल नबवी

(13) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) चिल्लाकर नहीं बोलते थे, सख़्त गुफ़्तगू नहीं करते थे। जिस बात पर लोग हँसते आप (सल्ल०) भी मुस्कुराते, जिसपर सब ताज्जुब करते आप (सल्ल०) भी उसमें शरीक हो जाते। किसी की बात काटकर अपनी बात शुरू न करते। हाँ अगर कोई हद से आगे बढ़ने लगता तो उसको रोक देते या ख़ुद मजलिस से चले जाते।

— शमाइल तिरमिज़ी

(14) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) बात ठहर-ठहरकर, स्पष्ट रूप से (खोलकर बयान) करते थे, जो सुनता, समझ लेता था।

— अबू दाऊद

अच्छा सोनेवाला

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) जिस समय आराम करते अपना दायाँ हाथ दाएँ गाल के नीचे रखते थे। — शमाइल तिरमिज़ी

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) आम तौर से सोने से पहले वुज़ू कर लिया करते थे। — शमाइल नबवी

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सोते समय आँख में सुरमा ज़रूर लगाते थे। — शमाइल तिरमिज़ी

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सोने से पहले दूसरे कपड़े की तहबन्द बाँधते और कुरता उतारकर टाँग देते। — शमाइल नबवी

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) रात में जब बिस्तर पर लेटते थे तो दोनों हाथों को दुआ माँगने की तरह मिलाकर उनपर कुरआन की सूरा इखलास और **मु'अव्व-ज़ तैन** पढ़कर दम फ़रमाते और तमाम बदन पर सिर से पाँव तक जहाँ-जहाँ हाथ जाता फेर लिया करते थे। तीन बार ऐसे ही करते। सिर से शुरू फ़रमाते, फिर मुँह और बदन का अगला हिस्सा और फिर बाक़ी बदन पर।

— शमाइल तिरमिज़ी

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सोने से पहले यह दुआ पढ़ लिया करते थे—

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيَا .

"अल्लाहुम-म बिसमि-क अमूतु व अह्या।"

(ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही नाम से मरता हूँ और तेरे ही नाम से ज़िन्दा हूँगा।)

—बुख़ारी, मुसलिम

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) जब नींद से जागते थे तो यह दुआ पढ़ा करते थे —.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ .

''अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अहयाना बअ़-द मा अमा-तना व इलैहिन्नुशूर।''

(उस अल्लाह का शुक्र है जिसने मौत के बाद हमको जिलाया और उसी की तरफ़ क़ियामत के दिन ज़िन्दा होकर उठना होगा।) — बुख़ारी

(8) आप (सल्ल०) कभी चित लेटते और पाँव पर पाँव रखकर आराम करते, मगर इस तरह कि बेपरदगी नहीं होती थी। अगर बेपरदगी का भय होता तो इस तरह लेटने से मना करते। — शमाइल नबवी

(9) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) किसी इनसान को पेट के बल औंधा लेटा हुआ या सोता हुआ देखते तो बहुत नाराज़ होते और पाँव से छेड़कर उसको उठा देते। — शमाइल नबवी

(10) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जब तुम अपने बिस्तर पर लेटने का इरादा करो तो पहले इस तरह वुज़ू करो जैसे नमाज़ के लिए किया जाता है, फिर अपने सीधे पहलू पर लेटो।'' — बुख़ारी, मुसलिम

(11) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जो बिस्तर पर लेटते समय अल्लाह का ज़िक्र न करेगा तो अल्लाह तआला उससे पूछ-गछ करेगा।'' — अबू दाऊद

अच्छी आदतवाला

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं : 1. जब बात कहे तो झूठ बोले, 2. वादा करे तो पूरा न करे, 3. जब अमानत रखी जाए तो उसमें ख़ियानत करे।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमान सुरक्षित रहे। और मुहाजिर वह है जिसने वह काम छोड़ दिया जिससे अल्लाह तआला ने मना किया है।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पूछा — ''तुम जानते हो, मुफ़लिस (निर्धन) कौन है?''

सहाबा (रज़ि०) ने कहा, ''हममें मुफ़लिस वह है जिसके पास न दिरहम हो न कोई और सरमाया।''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''मेरी उम्मत में मुफ़लिस वह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े, ज़कात के साथ आएगा, लेकिन उसके साथ यह बुरी आदतें भी होंगी कि फ़लाँ को गाली दी है, फ़लाँ पर आरोप लगाया है, फ़लाँ का माल खाया है, फ़लाँ का ख़ून बहाया है और फ़लाँ को मारा है। अतः उसकी कुछ नेकी फ़लाँ और कुछ नेकी फ़लाँ को दे दी जाएगी। अब अगर उसकी सब नेकियाँ ख़त्म हो गईं और अदायगी बाक़ी रही तो फिर उन सबकी बुराइयाँ लेकर उसपर डाल दी जाएँगी और फिर उसे आग में झोंक दिया जाएगा।''

—मुसलिम

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''बेशक मैं भी इनसान हूँ। तुम मेरे पास मुक़द्दमा लाते हो और तुममें का कोई अपनी तेज़ ज़बानी से काम लेता है, तो मैं उसी तरह करूँगा जो मैंने सुना है। अगर मैंने अपने सुनने के मुताबिक़ उसके भाई का हक़ उसको दिलवा दिया तो मानो उसके लिए आग का

एक टुक़ड़ा काट दिया।'' —बुख़ारी

मुक़द्दमे का फ़ैसला दोनों फ़रीक़ों के बयान के अनुसार होता है, अगर किसी फ़रीक़ ने अपनी तेज़ ज़बानी से ग़लत वाक़िआ को सच साबित कर दिया और मुक़द्दमा जीत गया तो उस तरह जीता हुआ माल उसके लिए हलाल नहीं हो सकता, बल्कि और मुसीबत का सबब बनेगा।

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''मोमिन की मिसाल उनकी आपस की मुहब्बत और रहमदिली में एक जिस्म की तरह है। जब उसका कोई अंग बीमार होता है तो सारा जिस्म जागता है और उसको बुख़ार आ जाता है।''

—बुख़ारी, मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''मुसलमान भाई-भाई हैं, न उसपर ज़ुल्म करे, न उसको बेसहारा छोड़े। और जो उसकी ज़रूरत पूरी करेगा तो अल्लाह उसकी ज़रूरत पूरी करेगा। जो किसी की तकलीफ़ दूर करेगा तो अल्लाह तआला उसकी तकलीफ़ क़ियामत के दिन दूर करेगा। जो किसी की सतरपोशी करेगा (उसे लिबास पहनाएगा) तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसकी सतरपोशी करेगा।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जो लोगों पर रहम नहीं करता, अल्लाह तआला उसपर रहम नहीं करता।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''वह हममें से नहीं है जो अपने छोटों पर रहम न करे और अपने बड़ों की इज़्ज़त न करे।''

—अबू दाऊद, तिरमिज़ी

(9) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सामने दुनिया का ज़िक्र किया गया तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''सुनो, सुनो! सादगी ईमान है, सादगी ईमान है।''

—अबू दाऊद

(10) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जब बन्दा किसी की ग़लती और ख़ता को माफ़ कर देता है तो अल्लाह उसकी इज़्ज़त बढ़ा देता है और ख़ातिर करने से दर्जा बुलन्द करता है।'' —मुसलिम

(11) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अपने नफ़्स के लिए कभी इनतिक़ाम (बदला) नहीं लिया। अगर अल्लाह की नाफ़रमानियों में कोई बात हुई तो अल्लाह के लिए इनतिक़ाम लिया।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(12) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जब तुममें से कोई आदमी पेशाब करे तो बिला ज़रूरत अपना दायाँ हाथ ख़राब न करे, न दाएँ हाथ से इसतिन्जा (पाकी हासिल) करे।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(13) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''दो लानती कामों से बचो।''

लोगों ने पूछा, ''वे कौन-से काम हैं?''

फ़रमाया — ''रास्ते में और साए के नीचे पेशाब-पाख़ाना करना।''

—मुसलिम

(14) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने रुके हुए पानी में पेशाब करने से मना फ़रमाया है। —मुसलिम

(15) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) दो क़ब्रों के पास से गुज़रे और फ़रमाया— ''इन दोनों क़ब्रवालों पर अज़ाब हो रहा है........इनमें से एक वह है जो पेशाब के छींटों से बचता नहीं था।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(16) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने तकल्लुफ़ करने से मना किया है।

—बुख़ारी

(17) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''आपस में बुग़्ज़ व अदावत (जलन और दुश्मनी) न रखो, आपस में हसद (ईर्ष्या) न करो, एक दूसरे से ताल्लुक़ न तोड़ो, आपस में रिश्ते न काटो, एक के सौदे पर दूसरा सौदा न करे और आपस में अल्लाह के बन्दो! भाई-भाई बनकर रहो। किसी मुसलमान के लिए जाइज़ नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा बोलना छोड़ दे।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(18) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''हसद से बचो। हसद

नेकी को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है या सूखी घास को।''

—अबू दाऊद

(19) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''बदगुमानी से बचो। बदगुमानी बहुत बड़ा झूठ है।''

—बुख़ारी, मुसलिम

(20) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी किब्र (अहंकार, घमंड) होगा वह जन्नत में न जाएगा।''

एक आदमी ने पूछा, ''ऐ अल्लाह के रसूल! आदमी की फ़ितरत है कि वह अच्छे कपड़ों को पसन्द करता है, अच्छे जूतों की इच्छा करता है।''

आप (सल्ल०) ने जवाब दिया, ''अल्लाह जमील है, जमाल को पसन्द करता है। ग़ुरूर और घमंड तो यह है कि आदमी हक़ बात न माने और लोगों को नीचा समझे।''

—मुसलिम

अच्छा लिबास पहनकर अकड़ते हुए चलना और अपने से कम दर्जे के लोगों को नफ़रत की नज़र से देखना किब्र या ग़ुरूर कहलाता है, विनम्रता और ख़ाकसारी के साथ अच्छे से अच्छे कपड़े पहनना नापसन्दीदा नहीं, बशर्ते कि हैसियत के अनुसार हों।

(21) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अपने मुसलमान भाई की (किसी कमज़ोरी की) हँसी न उड़ाओ, वरना अल्लाह तआला उसपर तो रहमत करेगा और तुमको (उस कमज़ोरी) में मुबतिला कर देगा।'' —तिरमिज़ी

(22) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जो हमसे दग़ाबाज़ी करे वह हममें से नहीं।''

—मुसलिम

(23) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''ज़ुल्म से डरो। ज़ुल्म क़ियामत के दिन अंधकार के रूप में होगा। कँजूसी और लालच से बचो। उसने पिछले उम्मतों को हलाक किया है। इसी ने उनको इस बात पर अमादा किया कि वह एक-दूसरे का ख़ून बहाएँ और हराम को जाइज़ क़रार दें।'' —मुसलिम

(24) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जो कोई किसी की

ऐसी बात सुनने की कोशिश करे जो उसे नहीं सुनाई जाती है तो क़ियामत के दिन उसके कानों में पिघला हुआ सीसा डाला जाएगा।'' — मुसनद अहमद

(25) हज़रत इब्न उमर (रज़ि०) किसी से अकेले में बातें कर रहे थे। हज़रत सईद मक़बरी (रज़ि०) उन दोनों के पास बैठने लगे तो हज़रत इब्न उमर (रज़ि०) ने उनके सीने पर थपकी देते हुए कहा, ''क्या तुम्हें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का यह फ़रमान मालूम नहीं है कि जब दो आदमी अकेले में बात कर रहे हों तो तीसरे आदमी को उनकी इजाज़त के बग़ैर न बैठना चाहिए।''

— मुसनद अहमद

अच्छे अख़लाक़वाला

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "मुझे अल्लाह की तरफ़ से भेजा गया है ताकि अख़लाक़ी अच्छाइयों को तमाम व कमाल तक पहुँचाऊँ।"

— मुवत्ता इमाम मालिक

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुममें सबसे बेहतर वह है जिसके अख़लाक़ अच्छे हों।"

— बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "क़ियामत के दिन मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द और मुझसे सबसे ज़्यादा क़रीब वे होंगे जो अच्छे अख़लाक़वाले हैं।"

— तिरमिज़ी

(4) एक आदमी ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से कहा, "मुझे वसीयत कीजिए।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "गुस्सा न करो।" उसने कई बार यही कहा और आप (सल्ल०) बार-बार यही जवाब देते रहे कि गुस्सा न करो।"

— बुख़ारी

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "पहलवान वह नहीं है जो किसी को पछाड़ दे। पहलवान वह है जो गुस्से के वक़्त अपने को क़ाबू में रखे।"

— बुख़ारी, मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम नेकी के किसी काम को मामूली न समझो, तुम अपने भाई से ख़ुशी के साथ मिलो, यह भी नेकी है और अपने डोल (बर्तन) का पानी अपने भाई के बर्तन में उंड़ेल दो, यह भी नेकी है।"

— तिरमिज़ी

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "दो आदमियों के बीच सुलह करा दो, यह भी नेकी है। तुम किसी को अपनी सवारी पर बैठा लो या उसका बोझ अपनी सवारी पर रख लो, यह भी नेकी है। अच्छी बात कहना भी

नेकी है। तुम्हारा हर क़दम जो नमाज़ के लिए उठता है, नेकी है। रास्ते से काँटे पत्थर हटा देना भी नेकी है।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जो इनसान अपने भाई की ज़रूरत के वक़्त उसके काम आएगा, अल्लाह ज़रूरत के वक़्त उसकी मदद करेगा।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(9) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''हया (शर्म) सिवाय ख़ूबी के और कुछ नहीं लाती।'' —बुख़ारी, मुसलिम

एक दूसरी हदीस में है कि ''हया सरासर ख़ैर (भलाई) है।''

(10) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''निर्लज्जता और बेशर्मी जिसमें होती है उसमें ख़राबी पैदा कर देती है और हया (शर्म) जिसमें होती है उसको सँवार देती है।'' —तिरमिज़ी

(11) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — हर उस मुसलमान बन्दे की दुआ क़बूल होती है जो अपने मुसलमान भाई के लिए उसकी पीठ पीछे दुआ करता है। एक फ़रिश्ता उसपर मामूर (नियुक्त) रहता है जब वह अपने भाई की ग़ैर मौजूदगी में कोई दुआ करता है तो वह फ़रिश्ता आमीन कहता है और कहता है, ''यही भलाई इसे भी अता कर।'' —मुसलिम

(12) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अगर किसी के साथ कोई एहसान किया गया और उसने उसी समय **'जज़ा-कल्लाहु ख़ैरा'** (अल्लाह तुमको अच्छा बदला दे) कह दिया तो मानो उसने एहसान करनेवाले की पूरी तारीफ़ कर दी।'' (यानी पूरा-पूरा बदला चुका दिया)। —तिरमिज़ी

(13) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''किसी मुसलमान के लिए जाइज़ नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा बोलना छोड़ दे। अगर तीन दिन उसी हालत में गुज़र जाएँ तो उसको चाहिए कि मुलाक़ात हो तो फ़ौरन सलाम करे। अगर दूसरे ने जवाब दे दिया तो सवाब में दोनों शरीक हुए और यदि उसने जवाब नहीं दिया तो वह गुनाहगार होगा और सलाम करनेवाला उस ताल्लुक़ काटने के गुनाह से निकल गया।'' —अबू दाऊद

(14) एक आदमी ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा, ''इस्लाम में कौन-सी बात अच्छी है।''

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''खाना-खिलाना और सलाम करना, चाहे किसी से जान-पहचान हो या न हो।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(15) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अल्लाह से ज़्यादा क़रीब वह आदमी है जो सलाम में पहल करता है।'' —अबू दाऊद

(16) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जब तीन आदमी एक जगह हों तो दो को आपस में कानाफूसी नहीं करना चाहिए, जब तक कि तुम और दूसरे लोगों से मिलजुल न जाओ। इसलिए कि यह कानाफूसी तीसरे को चिन्तित कर देगी।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(17) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जब कोई इनसान अपने मुसलमान भाई को काफ़िर कहकर पुकारेगा तो उन दोनों में एक पर ज़रूर कुफ़्र लाज़िम हो जाएगा। जिसपर कुफ़्र का दोष लगाया गया है अगर वह ऐसा है तो उसपर गया, वरना कहनेवाले पर लौट आएगा।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(18) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ख़ुशबूदार चीज़ वापस नहीं करते थे। —बुख़ारी

(19) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''क़ियामत में हक़वालों को हक़ दिलाए जाएँगे। यहाँ तक कि मुंडी बकरी को सींगवाली बकरी से हक़ दिलाया जाएगा।'' —मुसलिम

(20) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज़रत अली (रज़ि०) को आदेश दिया कि ''ऐ अली! अपनी रान न खोलो (क्योंकि यह पर्दे में शामिल है) और किसी ज़िन्दा या मुरदा आदमी की रान की तरफ़ नज़र न करो।'' —अबू दाऊद, इब्न माजा

(21) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''मर्द दूसरे मर्द की सतर की तरफ़ और औरत दूसरी औरत के सतर की तरफ़ नज़र न करे।'' —मुसलिम

(22) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "लोगो! तनहाई में भी नंगा होने से बचो (बिना ज़रूरत अकेले में भी सतर न खोलो) क्योंकि तुम्हारे साथ फ़रिश्ते बराबर रहते हैं। पाखाना-पेशाब और मियाँ-बीबी की सोहबत के समय के अलावा किसी भी समय तुमसे वह अलग नहीं होते। इसलिए उनसे शर्म करो और उनका एहतिराम करो।" —तिरमिज़ी

(23) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज़रत अली (रज़ि०) को मुखातिब करके फ़रमाया — "ऐ अली! (अगर किसी नामहरम— जिससे परदा करना वाजिब है— पर तुम्हारी नज़र पड़ जाए तो) दुबारा नज़र न डालो। तुम्हारे लिए पहली नज़र (जो बिना इरादा अचानक पड़ गई वह) तो जाइज़ है (अर्थात उसपर पकड़ और गुनाह न होगा) मगर दूसरी जाइज़ नहीं।"

— मुसनद अहमद, तिरमिज़ी, अबू दाऊद

(24) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिस मोमिन मर्द की किसी औरत के हुस्न व जमाल पर पहली बार नज़र पड़ जाए फिर वह अपनी निगाह नीची कर ले (उसकी तरफ़ न देखे) तो अल्लाह उसको ऐसी इबादत नसीब करेगा जिसकी लज़्ज़त व मिठास वह महसूस करेगा।" —मुसनद अहमद

(25) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "किसी के लिए यह बात जाइज़ नहीं है कि (क़रीब-क़रीब बैठे हुए) दो आदमियों के दरमियान उनकी इजाज़त के बिना बैठकर उन्हें एक-दूसरे से अलग कर दे।"

—अबू दाऊद, तिरमिज़ी

(26) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मसजिद में बैठे थे। एक आदमी आप (सल्ल०) के पास आया तो आप (सल्ल०) उसके लिए अपनी जगह से खिसक गए। उसने पूछा— "ऐ अल्लाह के रसूल! जगह में काफ़ी गुंजाइश है (हटने का कष्ट न फ़रमाएँ)।"

प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया — "मुसलिम का यह हक़ है कि जब कोई भाई उसको (अपने पास आता) देखे तो उसके लिए अपनी जगह से कुछ हटे (और अपने क़रीब बैठाए)।" —बैहक़ी

(27) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "कोई आदमी ऐसा न करे कि किसी दूसरे को उसकी जगह से उठाकर ख़ुद उस जगह बैठ जाए, बल्कि लोगों को चाहिए कि (आनेवालों के लिए) कुशादगी और गुंजाइश पैदा करें (और उनको जगह दे दें)।"
—बुख़ारी, मुसलिम

(28) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो इनसान अपनी जगह से (किसी ज़रूरत से) उठा और फिर वापस आ गया तो उस जगह का वही शख़्स ज़्यादा हक़दार है।"
—मुसलिम

(29) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिस आदमी को इस बात से ख़ुशी हो कि लोग उसके आदर में खड़े रहें, उसे चाहिए कि वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"
— तिरमिज़ी, अबू दाऊद

(30) एक बार अल्लाह के रसूल (सल्ल०) लाठी का सहारा लेते हुए बाहर निकले तो सहाबा (रज़ि०) खड़े हो गए। आप (सल्ल०) ने कहा, "तुम इस तरह मत खड़े हो जिस तरह अजमी लोग एक-दूसरे के सम्मान में खड़े हो जाते हैं।"
—अबू दाऊद

(31) सहाबा (रज़ि०) के लिए कोई शख़्सियत भी प्यारे नबी (सल्ल०) से ज़्यादा प्यारी नहीं थी, इसके बावजूद उनका तरीक़ा यह था कि वे प्यारे नबी (सल्ल०) को देखकर खड़े नहीं होते थे, क्योंकि जानते थे कि यह आप (सल्ल०) को पसन्द नहीं है।"
— तिरमिज़ी

अच्छा बन्दा

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "बेशक अल्लाह तआला न तुम्हारे जिस्मों को देखता है और न तुम्हारी सूरतों को, उसकी नज़र तो तुम्हारे दिलों पर रहती है (अर्थात नीयत देखता है)।" —हज़रत अबू हुरैरा

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "ऐ लोगो! अल्लाह से तौबा करो और बख़्शिश चाहो। बेशक मैं दिन में सौ बार तौबा करता हूँ।"

—मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अल्लाह अपने मोमिन बन्दे की तौबा से इतना ख़ुश होता है जैसा कि वह सवार जिसकी सवारी खाने-पीने के सामान के साथ किसी चटियल मैदान में खो जाए और वह मायूस होकर एक पेड़ के नीचे सो जाए। जब आँख खुले तो देखे कि वह सवारी खड़ी है। अतः वह सवार लगाम पकड़कर ख़ुशी के मारे यूँ कहने लगे कि ऐ अल्लाह! तू मेरा बन्दा है, मैं तेरा रब हूँ।" —हज़रत अबू हमज़ा व अनस बिन मालिक

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) फ़रमाते थे — "अल्लाह तआला का इरशाद है कि ऐ आदम की औलाद! जब तक तू मुझसे माँगेगा और मुझसे उम्मीद रखेगा तो मैं तुझको बख़्शूँगा, चाहे तू किसी अमल पर हो, और मैं कुछ परवाह न करूँगा। ऐ आदम के बेटे! अगर तेरे गुनाह आसमान तक पहुँच जाएँ और तू मुझसे बख़्शिश तलब करे तो मैं तुझको बख़्श दूँगा और कुछ परवाह न करूँगा। ऐ आदम की औलाद! अगर तुम इस क़द्र ख़ताएँ करो कि ज़मीन तुम्हारी ख़ताओं से भर जाए और फिर मुझसे मिलो, मगर मेरा शरीक न ठहराओ तो मैं तुम्हारे पास उतनी ही मग़फ़िरत के साथ आऊँगा कि ज़मीन भर जाए।"

—तिरमिज़ी

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिसने किसी को

हिदायत की तरफ़ बुलाया तो उसको नेक अमल करनेवाले की तरह अज्र (बदला) मिलेगा, और अमल करनेवाले के अज्र में कोई कमी न होगी। और जिसने गुमराही की तरफ़ बुलाया तो उसपर ऐसा ही गुनाह होगा जैसा करनेवाले पर और करनेवाले के गुनाह में कोई कमी न होगी।'' —मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''तुम अगर किसी को बुराई करते देखो तो अपने हाथ से रोको। अगर न रोक सको तो ज़बान से मना करो। और अगर ज़बान से भी मना न कर सको तो उसे अपने दिल में बुरा समझो और यह ईमान का सबसे कमज़ोर दर्जा है।'' —मुसलिम

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''सफ़ेद बाल न उखाड़ो। यह क़ियामत में मुसलमानों के लिए नूर होंगे।'' —अबू दाऊद, तिरमिज़ी

(8) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''छोड़ दो जो तुमको शक में डाले और उस चीज़ को अपनाओ जिससे तुम्हारे दिल में खटक न पैदा हो। अतः बेशक सच इतमीनान है और शक झूठ है।'' —तिरमिज़ी

(9) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अक़्लमंद वह है जो अपने नफ़्स (मन) का जायज़ा ले और आखिरत के लिए अमल करे। पीछे रह जानेवाला वह है जो अपने नफ़्स को अपनी इच्छा के तहत कर दे और अल्लाह से बड़ी-बड़ी उम्मीदें लगाए बैठा रहे।'' —तिरमिज़ी

(10) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अल्लाह को ग़ैरत आती है और उसकी ग़ैरत यह है कि इनसान वह अमल करे जो अल्लाह ने उसपर हराम कर दिया था।'' —हज़रत अबू हुरैरा

(11) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''तुममें सबसे अच्छा वह इनसान है जो कुरआन पढ़े और पढ़ाए।'' —बुखारी

(12) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''कुरआन पढ़ा करो, यह क़ियामत के दिन अपने पढ़नेवालों की सिफ़ारिश करेगा।'' —मुसलिम

(13) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''अल्लाह का फ़रमान है कि जब मेरा बन्दा मुझसे एक बित्ता (बालिश्त) क़रीब होता है तो मैं उससे एक

हाथ क़रीब होता हूँ। जब वह एक हाथ क़रीब होता है तो मैं उससे दो हाथ क़रीब होता हूँ और जब वह मेरे पास चलकर आता है तो मैं उसकी तरफ़ दौड़कर आता हूँ। —बुख़ारी

(14) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "दो नेमतें हैं जिनमें बहुत लोग घाटे में हैं.........तन्दरुस्ती और फ़ुरसत।"

यानी जो लोग तन्दरुस्ती और फ़ुरसत के वक़्त की क़द्र नहीं करते और उनको बरबाद कर देते हैं वे इन दोनों नेमतों से महरूम कहलाते हैं।

(15) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर छः हक़ हैं —

1. जब मिले तो सलाम करे, 2. जब दावत दे तो क़बूल करे, 3. छींक का जवाब दे, 4. जब बीमार हो तो ख़ैर-ख़बर पूछने जाए, 5. जिस चीज़ को अपने लिए अच्छा समझे, अपने भाई के लिए भी अच्छा समझे और, 6. जब मृत्यु हो तो जनाज़े में शिरकत करे।"

(16) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) फ़रमाते थे — "तसवीर बनानेवाला आग में डाला जाएगा और जितनी तसवीरें उसने बनाई हैं उन सबमें जान डाल दी जाएगी। वह उसपर अज़ाब करेंगी।"

हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि अगर तसवीरें बनाना ज़रूरी समझो तो बेजान चीज़ों की तसवीरें बनाओ, जैसे पेड़ आदि।

—बुख़ारी, मुसलिम

(17) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "खेत और चौपायों की निगरानी के लिए और शिकार के लिए कुत्ता पाला जा सकता है। इसके अलावा किसी और नीयत से अगर कोई कुत्ता पालेगा तो हर रोज़ उसकी दो क़िरात नेकियाँ कम होती जाएँगी।" —बुख़ारी, मुसलिम

नोट: क़िरात तक़रीबन आधा रत्ती के बराबर होता है।

(18) जब किसी आदमी के मुँह से लहसुन या प्याज़ की बू आती तो प्यारे

नबी (सल्ल०) उसको (मसजिद से) निकाल देते थे और आदेश देते कि 'बक़ीअ' तक चला जाए। अतः जिसको लहसुन, प्याज़ खाना ही हो तो उसको इतना पकाए कि उसकी बू मर जाए। —मुसलिम

(19) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "दो आँखों को आग नहीं छू सकती। एक वह आँख जो अल्लाह के डर से रोई। दूसरी वह जो अल्लाह के रास्ते में पहरा देती रही।" —तिरमिज़ी

(20) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अगर मैं अपनी उम्मत के लिए मुशकिल न समझता तो आदेश देता कि हर नमाज़ के समय मिसवाक (दातून) करें।" —बुख़ारी, मुसलिम

आप (सल्ल०) दाँतों और मुँह की सफ़ाई का बहुत ख़याल रखते थे, ताकि मुँह से बदबू न आने पाए। इसी लिए इसकी ताकीद की है।

(21) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "मेरी उम्मत के मर्दों पर सोना (इस्तेमाल करना) हराम है और औरतों पर हलाल है।" —तिरमिज़ी

(22) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "किसी मुसलमान के लिए यह मुनासिब नहीं कि उसके पास वसीयत के लायक़ कोई चीज़ हो और वह दो रातें इस हाल में गुज़ार दे कि वसीयत लिखकर न रखी हो।"
—बुख़ारी, मुसलिम

नोटः इसका यह मक़सद है कि मौत का ख़याल हमेशा रहे। न मालूम मुद्दत कब पूरी हो जाए और बुलावा आ जाए। इसी लिए वसीयतनामा लिखा हुआ तैयार रहना चाहिए।

(23) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "मौत की कोई भी आरज़ू न करे। अगर वह इनसान नेक है तो मुमकिन है कि उम्र के बढ़ने से उसकी नेकियों में बढ़ोतरी होती रहे और अगर बुरा है तो शायद वह तौबा करके अल्लाह को राज़ी कर ले।" —बुख़ारी, मुसलिम

(24) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "बन्दा उस समय तक

परहेज़गार के दर्जे में नहीं पहुँच सकता जब तक कि गुनाह से बचने के लिए वह मुबाह को भी न छोड़ दे।''
—तिरमिज़ी

नोट: मबाह उस चीज़ को कहते हैं जो जाइज़ तो हो मगर पसन्दीदा न हो।

(25) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''ख़ुशनसीब है वह जिसको इस्लाम की तौफ़ीक़ मिली और उसको ज़रूरत के मुताबिक़ ज़िन्दगी का सामान हासिल है और वह उसपर ख़ुश और संतुष्ट है।''
—तिरमिज़ी

इनसान की बेइतमीनानी और बेचैनी का असल सबब दौलत व इज़्ज़त की बढ़ती हुई इच्छा है जो कभी ख़त्म नहीं होती। यहीं वजह है कि ज़िन्दगी की बहुत सारी ज़रूरतें पूरी होने के बाद भी लोग सुकून व इतमीनान से महरूम रहते हैं। इस हदीस में यही बात समझाई गई है कि ज़िन्दगी की ज़रूरतें हासिल होने के बाद अगर इनसान ने सन्तोष कर लिया तो उसकी ज़िन्दगी रश्क के क़ाबिल बन जाएगी।

(26) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज़रत अबू फ़रास रबी'आ (असहाब सुफ़्फ़ा में से थे) से फ़रमाया — ''मुझसे माँगो।''

उन्होंने कहा, ''मैं जन्नत में आप (सल्ल०) का साथ चाहता हूँ।''
आप (सल्ल०) ने कहा, ''कुछ और।''
उन्होंने कहा, ''बस यही।''
आप (सल्ल०) ने कहा, ''बहुत ज़्यादा सजदे करके मेरी मदद करो।''
— मुसलिम

मुराद यह है कि मैं तो दुआ करूँगा ही, लेकिन तुम भी ख़ूब इबादत करो और नमाज़ पढ़ो। यानी दुआ के साथ अमल भी ज़रूरी है।

(27) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''यतीम की परवरिश करनेवाला और मैं जन्नत में इस तरह होंगे (शहादत की उँगली और बीच की उँगली में कुछ फ़र्क़ रखकर बताया कि इस तरह अर्थात पास-पास)।''
— मुसलिम

(28) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "बेवा और मिसकीन की ख़बर लेनेवाला अल्लाह के रास्ते में लड़नेवाले की तरह है।" और शायद यह भी कहा, "ऐसे आबिद की तरह है जो सुस्त न पड़े या ऐसे रोज़ेदार की तरह है जो इफ़्तार न करे।"
—बुख़ारी, मुसलिम

(29) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "सात आदमी ऐसे हैं जिनपर अल्लाह अपना साया करेगा, जिस दिन अल्लाह के साये के अलावा कोई साया न होगा। इनमें से दो ये हैं —

1. वह इनसान जिसको कोई हसीन औरत बुलाए तो कहे मैं अल्लाह से डरता हूँ।
2. जो तनहाई में अल्लाह को याद करे और उसके आँसू बहने लगें।"

— बुख़ारी, मुसलिम

(30) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "तुम रास्ते में बैठने से बचो।"

लोगों ने पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल! यह तो हमारे लिए ज़रूरी है।"

आपने फ़रमाया, "अगर तुम्हारे लिए यह ज़रूरी है तो रास्ते को उसका हक़ दो।"

उन्होंने मालूम किया कि "रास्ते का क्या हक़ है?"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, " निगाहें नीची रखना, तकलीफ़ देनेवाली चीज़ों को रास्ते से हटा देना, सलाम का जवाब देना, नेकी का हुक्म देना और बुराई से मना करना।"
—बुख़ारी, मुसलिम

(31) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "क़ियामत में वे लोग मुझसे सबसे ज़्यादा क़रीब होंगे जो मुझपर सबसे ज़्यादा दुरूद भेजेंगे।"

—तिरमिज़ी

(32) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "वह कंजूस है जिसके सामने मेरी चर्चा की जाए और वह मुझपर दुरूद न भेजे।" — तिरमिज़ी

(33) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जिसने अपने मुसलमान भाई की आबरू की हिमायत की तो अल्लाह क़ियामत के दिन उसके मुँह से दोज़ख की आग को दूर रखेगा।" —तिरमिज़ी

(34) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "सात चीज़ें हलाक करनेवाली हैं, उनसे बचो —

1. अल्लाह का शरीक ठहराना, 2. जादू करना, 3. उस जान को हलाक करना जिसको अल्लाह ने हराम किया है, 4. सूद (ब्याज) खाना, 5. यतीम का माल खाना, 6. लड़ाई के दिन पीठ दिखाना, और 7. भोली-भाली पाक दामन औरतों पर आरोप लगाना।" —बुख़ारी, मुसलिम

(35) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो किसी मुसलमान का हक़ झूठी क़सम खाकर दबा लेगा तो अल्लाह उसपर जन्नत हराम कर देगा और दोज़ख़ वाजिब कर देगा।"

एक आदमी ने पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल! अगर मामूली चीज़ हो?"

आप (सल्ल०) ने कहा, "चाहे पीलू की एक लकड़ी ही हो।"

—मुसलिम

(36) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "यदि तुम किसी बात पर क़सम खा लो फिर उससे अच्छी बात देखो तो उसको इख़तियार कर लो और क़सम का कफ़्फ़ारा दे दो।" —बुख़ारी, मुसलिम

कफ़्फ़ारा यह है कि एक ग़ुलाम को आज़ाद करना या दस ग़रीबों को खाना खिलाना या कपड़े पहनाना, जिससे उनका बदन ढक जाए या तीन रोज़े रखना।

(37) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जो तुमसे अल्लाह का वास्ता देकर पनाह माँगे, उसको पनाह दो। जो तुमसे अल्लाह का वास्ता देकर सवाल करे, उसका सवाल पूरा करो। जो तुम्हारी दावत करे, तुम उसकी दावत क़बूल करो और जो कोई तुमपर एहसान करे उसका बदला दो। अगर तुम्हारे पास बदला देने लायक़ कोई चीज़ नहीं है तो उसके लिए दुआ करो और इतनी दुआ कि समझ लो कि उसका बदला हो गया।" —अबू दाऊद, नसई

(38) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पक्की क़ब्र बनाने, उसपर बैठने और उसपर इमारत बनाने से मना किया है।'' —मुसलिम

(39) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में बिना ढके हुए एक प्याले में दूध लाया गया तो आप (सल्ल०) ने कहा — ''इसे ढककर क्यों नहीं लाए, (अगर कुछ न था तो) लकड़ी ही उसपर रख लाते।''

—मुसनद अहमद

(40) हज़रत उमर (रज़ि०) ने प्यारे नबी (सल्ल०) से पूछा कि ''जिस आदमी को ग़ुस्ल की हाजत हो गई हो क्या उसे (बिना नहाए) सोना जाइज़ है?''

आप (सल्ल०) ने कहा, ''हाँ! और (सफ़ाई पसन्द आदमी को) चाहिए कि वह नमाज़ के जैसा वुज़ू कर लिया करे।'' —मुसनद अहमद

(41) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''जब तुम किसी शहर में ताऊन (प्लेग) की ख़बर सुनो तो न जाओ और जब तुम्हारी ही जगह में ताऊन हो तो वहाँ से न निकलो।'' —बुख़ारी, मुसलिम

इस हदीस शरीफ़ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जानते-बूझते अपने आपको किसी मुसीबत में डालना नहीं चाहिए। लेकिन यदि कोई मुसीबत आ जाए तो उसका मुक़ाबला करना चाहिए और हिम्मत न हारना चाहिए।

(42) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''उस इनसान पर अल्लाह की रहमत न होगी जो इनसानों पर रहम न खाएगा और उनके साथ नरमी का व्यवहार न करेगा।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(43) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''तुम ज़मीनवालों के साथ रहम का मामला करो, आसमानवाला तुमपर रहम करेगा।''

—अबू दाऊद, तिरमिज़ी

(44) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''सारी मख़लूक़ अल्लाह का ख़ानदान है। इसलिए अल्लाह को ज़्यादा मुहब्बत-पसंद अपनी मख़लूक़ में वह

आदमी है जो अल्लाह के ख़ानदान के साथ एहसान और अच्छा सुलूक करे।''

—बैहक़ी

(45) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) एक ऊँट के पास से गुज़रे जिसका पेट (भूख की वजह से) उसकी कमर से लग गया था तो आप (सल्ल०) ने कहा, ''लोगो! इन बेज़बान जानवरों के मामले में ख़ुदा से डरो (और उनको इस तरह भूखा न मारो)।''

—अबू दाऊद

(46) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की नज़र एक गधे पर पड़ी जिसके चेहरे पर दाग़ देकर निशान बनाया गया था तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''उसपर ख़ुदा की लानत जिसने यह किया।''

—मुसनद अहमद

(47) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''एक बदचलन औरत की इस अमल की बुनियाद पर बख़शिश हो गई कि वह एक कुत्ते के पास से गुज़री जो एक कुएँ के पास इस हालत में (चक्कर काट रहा) था कि उसकी ज़बान बाहर निकली हुई थी और वह हाँफ रहा था और क़रीब था कि प्यास से मर जाए। उस औरत ने अपने पैरों से चमड़े का मोज़ा उतारा फिर अपनी ओढ़नी में उसको बाँधा और उस प्यासे कुत्ते के लिए पानी निकाला (और पिलाया) तो उसी पर उसकी मग़फ़िरत का फ़ैसला फ़रमा दिया गया।'' —बुख़ारी, मुसलिम

(48) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''एक ज़ालिम औरत को एक बिल्ली को मार डालने के जुर्म में अज़ाब दिया गया। उसने उस बिल्ली को बन्द कर लिया। न तो ख़ुद उसे कुछ खाने को दिया और न उसे छोड़ा कि वह ज़मीन की चीज़ों से अपना पेट भर लेती (इस तरह उसको भूखा तड़पा-तड़पाकर मार डाला)।''

—बुख़ारी, मुसलिम

अच्छा ज़िक्र करनेवाला

(1) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अल्लाह का ज़िक्र करनेवालों और ज़िक्र न करनेवालों की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दा की-सी है।"

— बुख़ारी

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "अल्लाह फ़रमाता है कि मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूँ जैसा वह मुझसे गुमान रखे। जब बन्दा मुझको याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ। अगर वह मुझको अपने दिल में याद करता है तो मैं उसको अपने दिल में याद करता हूँ। और अगर मजमे में याद करता है तो मैं उसको ऐसे मजमे में याद करता हूँ जो उससे अच्छा है (अर्थात फ़रिश्तों के मजमे में)।"

— बुख़ारी, मुसलिम

(3) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "सबसे अफ़ज़ल ज़िक्र **'ला इला-ह इल्लल्लाह'** (अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं) है।"

— तिरमिज़ी

(4) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "मैं तुमको जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने की ख़बर दे दूँ?"

अर्ज़ किया गया, "ऐ अल्लाह के रसूल! फ़रमाइए।"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया —

"لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ"

"ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह।" — बुख़ारी, मुसलिम

(कोई तदबीर और कोई ताक़त नहीं मगर अल्लाह के ज़रिए ।)

(5) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "क्या कोई दिन में एक हज़ार नेकी कमाने से मजबूर है?"

एक आदमी ने कहा, ''ऐ अल्लाह के रसूल! भला दिनभर में एक हज़ार नेकी कौन कर सकता है?''

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, '''**सुबहानल्लाह**' (अल्लाह पाक है) सौ बार पढ़ लेने से एक हज़ार नेकियाँ हासिल हो जाएँगी या हज़ार गुनाह उससे मिटा दिए जाएँगे।''
— मुसलिम

(6) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — ''दो कलिमे ऐसे हैं जो ज़बान पर तो हलके-फुलके हैं मगर मीज़ान (तराज़ू) में बहुत भारी होंगे और खुदा को बहुत प्यारे हैं। वे ये हैं :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ

''सुबहानल्लाहि व बि हमदिही, सुबहानल्लाहिल अज़ीम ।''
(अल्लाह पाक है और तारीफ़ उसी की है । पाक है अज़मतवाला अल्लाह।)
— बुख़ारी, मुसलिम

(7) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया —

''**सुबहानल्लाह** (अल्लाह पाक है) और **अलहम्दुलिल्लाह** (तारीफ़ अल्लाह के लिए है) और **ला इला-ह इल्लल्लाह** (अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही) और **अल्लाहु-अकबर** (अल्लाह सबसे बड़ा है) कहना मुझे उन तमाम चीज़ों से प्यारा है जिनपर सूरज निकलता है।''
— मुसलिम

(8) सुबह व शाम पढ़ने के लिए प्यारे नबी (सल्ल०) ने इस दुआ का उपदेश दिया है —

" اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ شَيْئٍ وَّ مَلِيْكَهٗ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَشَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهٖ .

''अल्ला हुम-म फ़ातिरस्समावाति वल अरज़ि आलिमल ग़ैबि वशशहादति, रब-ब कुल्लि शैइवँ व मलीकहू अशहदु अल्ला इला-ह इल्ला

अन-त, अऊज़ु बि-क मिन शर्रि नफ़सी व शर्रिश्शैतानि व शिरकिही।''

(ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पैदा करनेवाले! ग़ैब व हाज़िर को जाननेवाले! हर चीज़ के मालिक व सरपरस्त! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे अलावा कोई बन्दगी के लायक़ नहीं, मैं तुझसे ही पनाह माँगता हूँ अपने नफ़्स की बुराई से, शैतान की बुराई से और उसके शिर्क से।) — तिरमिज़ी

(9) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सुबह व शाम यह दुआ पढ़ा करते थे और फ़रमाया करते थे कि जो इनसान यह दुआ पढ़ेगा क़ियामत के दिन ख़ुदा ज़रूर उसको राज़ी कर देगा—

رَضِينَا بِاللّٰهِ رَبًّا وَبِالإِسْلامِ دِيْنًا وَبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا وَّرَسُوْلاً .

''रज़ीना बिल्लाहि रब्बन, व बिल इसलामि दीनन, व बि मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबिय्यँव व रसूलन।''

(हम राज़ी हैं अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद (सल्ल०) के नबी व रसूल होने पर।) — हिसने हसीन

(10) नबी (सल्ल०) के सामने एक दिन दो आदमियों को छींक आई। उनमें जो ज़्यादा इज़्ज़तवाला था उसने छींक पर **'अलहम्दुलिल्लाह'** नहीं पढ़ा और दूसरे ने पढ़ा। अतः नबी (सल्ल०) ने दूसरे को **'यरहमुकल्लाह'** पढ़कर जवाब दिया तो इज़्ज़तदार ने कहा, ''मुझे आप (सल्ल०) ने छींक का जवाब नहीं दिया।'' आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''उसने अल्लाह तआला को याद किया तो मैंने उसे याद किया और तूने अल्लाह को भुला दिया तो मैंने भी तुझे भुला दिया।'' — मुसनद अहमद

नोट: **'यरहमुकल्लाह'** (अल्लाह आपपर रहम करे) सुनकर छींकनेवाला जवाब दे — **'यहदीकुमुल्लाह'** (अल्लाह आपको हिदायत बख़्शे)।

(11) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पाख़ाने में दाख़िल होने के समय यह दुआ पढ़ा करते थे —

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ أَعُوْذُبِکَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ .

''अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल ख़ुबुसि वल ख़बाइस।''

(ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ गन्दगी और गन्दी चीज़ों से।)

— तिरमिज़ी

(12) जब आप (सल्ल०) पाख़ाने से निकलते तो कहते —

غُفْرَانَکَ اَللّٰهُمَّ.

''ग़ुफ़रा-न-क अल्ला हुम-म।''

(ऐ अल्लाह! हम तुझसे बखशिश माँगते हैं।) — हिसने हसीन

(13) नबी करीम (सल्ल०) जब किसी मरीज़ की खबर लेने जाते थे तो उसके सिरहाने बैठते थे और इसके बाद सात बार कहते —

أَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَکَ .

''अस्अलुल्लाहल अज़ी-म रब्बल अरशिल अज़ीमि अँय्यशफ़ि-य क।''

(मैं सवाल करता हूँ अज़ीम अल्लाह से जो अर्शे अज़ीम का रब है कि वह तुझे तन्दुरुस्ती दे।)

— मिशकात

(14) जब पहली तारीख़ का चाँद देखते तो यह दुआ पढ़ते —

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْأَمْنِ وَالْإِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ وَالتَّوْفِيْقِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی رَبِّیْ وَرَبُّکَ اللّٰهُ.

''अल्लाहुम-म अहिल्लहू अलैना बिल अमनि वल ईमानि वस्सलामति वल इसलामि व तौफ़ीक़ि लिमा तुहिब्बु व तरज़ा, रब्बी व रब्बुकल्लाह।''

(ऐ अल्लाह! इस चाँद को हमपर ख़ैरो बरकत, ईमान व सलामती, और इस्लाम और उस चीज़ की तौफ़ीक़ देने के साथ निकाल जिससे तू राज़ी होता है

और पसन्द करता है। (ऐ चाँद) मेरा और तेरा परवरदिगार अल्लाह है।)

— हिसने हसीन

(15) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) जब घर से बाहर निकलते तो आसमान की तरफ़ निगाह उठाकर फ़रमाते —

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ اَنْ نَزِلَّ اَوْ نَزِلَّ وَاَنْ نَضِلَّ اَوْ نُضِلَّ اَوْنَظْلِمَ اَوْيُظْلَمُ عَلَيْنَا اَوْنَجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَيْنَا .

"बिसमिल्लाहि तवक्कलतु अ़लल्लाहि, अल्ला हुम-म इन्नी अऊ़ज़ु-बि-क मिन अन नज़िल-ल अव न-ज़ल-ल व अन नज़िल-ल अव नुज़िल-ल अव नज़-लि-म अव युज़लमु अ़लैना, अव नज-हलु अव युजह-ल अ़लैना।"

(अल्लाह ही के नाम से (मैं निकलता हूँ और) मैंने अल्लाह ही पर भरोसा किया। ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ (इस बात से) कि हमारे क़दम डगमगाएँ या कोई दूसरा हमें डगमगा दे, हम ख़ुद भटक जाएँ या कोई भटका दे, हम ख़ुद किसी पर ज़ुल्म कर बैठें या कोई हमपर ज़ुल्म करे, हम ख़ुद नादानी कर बैठें या कोई और हमारे साथ नादानी की हरकत कर बैठे।) — मुसनद अहमद

(16) घर से निकलते वक़्त यह दुआ पढ़े तो शैतानी वसवसों से बचा रहेगा—

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ .

"बिसमिल्लाहि तवक्कल्तु अ़लल्लाहि वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह।"

(अल्लाह के नाम से, अल्लाह ही पर मैंने भरोसा किया और अल्लाह की मदद के बिना कोई तदबीर और कोई ताक़त हासिल नहीं हो सकती।)

— तिरमिज़ी

(17) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "जब आदमी अपने घर में आए तो पहले यह दुआ पढ़े और फिर घरवालों से 'अस्सलामु अलैकुम' कहे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ خَیْرَ الْمَوْلَجِ وَخَیْرَ الْمَخْرَجِ، بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا، وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا، وَعَلَی اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَکَّلْنَا.

"अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क ख़ैरल मौलजि व ख़ैरल मख़रजि, बिसमिल्लाहि वलजना, व बिसमिल्लाहि ख़रजना, व अलल्लाहि रब्बिना तवक्कलना।"

(ऐ अल्लाह! मैं तुझसे घर में दाख़िल होने और निकलने की बेहतरी माँगता हूँ, हम अल्लाह के नाम पर दाख़िल हुए और अल्लाह के नाम पर निकले और अपने रब अल्लाह पर भरोसा किया।) —अबू दाऊद

(18) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया — "ख़ुदा का जो बन्दा हर सुबह और शाम तीन-तीन बार यह दुआ पढ़ ले उसे कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती:

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اِسْمِهٖ شَیْئٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

"बिसमिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुररू मअ़ इसमिही शैउन फ़िल अरज़ि वला फ़िस्समाइ व हुवस्समीउ़ल अ़लीम।"

(अल्लाह के नाम से, जिसके नाम के साथ ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। वह सुनने और जाननेवाला है।)

— सुनन अरबआ़

(19) जब किसी को किसी मुसीबत में मुबतिला देखे तो हमदर्दी का इज़हार करे और दिल में यह दुआ पढ़े —

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاکَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی کَثِیْرٍ

مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلاً .

''अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मब तला-क बिही व फ़ज़्-ज़-लनी अ़ला कसीरिम मिम्मन ख़-ल-क़ तफ़ज़ीला।''

(अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे इस मुसीबत व तकलीफ़ से दूर रखा जिसमें तुझे मुबतिला किया और मुझे अपनी बहुत-सी मख़लूक़ पर बड़ाई दी।)
— तिरमिज़ी

(20) जब क़ब्रिस्तान से गुज़रे तो यह दुआ पढ़े —

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَلَاحِقُوْنَ، نَسْأَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ .

''अस्सलामु अ़लैकुम अहलद्दियारि मिनल मोमिनी-न वल मुसलिमी-न व इन्ना इन्शा अल्लाहु बिकुम ल-लाहिक़ू-न, नस्अलुल्ला-ह लना व लकुमुल आ़फ़ियः।''

(ऐ इस दयार के रहनेवाले मोमिन मुसलिम वासियो! तुमपर सलाम हो, अगर अल्लाह ने चाहा तो हम तुमसे जल्द आ मिलेंगे। हम अल्लाह से अपने और तुम्हारे लिए आफ़ियत का सवाल करते हैं।) — मुसलिम

(21) जब किसी परेशानी, रंज व ग़म में घिर जाए तो यह दुआ पढ़े —

يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ .

''या हय्यु या क़य्यूमु बिरह-मति-क असतग़ीस।''

(ऐ ज़िन्दा जावेद हस्ती! ऐ कायनात को चलानेवाले! मैं तेरी रहमत से फ़रियाद करता हूँ।) — तिरमिज़ी

(22) गुस्सा दूर करने के लिए यह पढ़े —

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ .

''अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम।''

(मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ धुतकारे हुए शैतान से।)— मुत्तफ़क़ अलैहि

(23) अख़लाक़ व अच्छी आदतों के लिए ये दुआएँ पढ़े —

(١) اَللّٰهُمَّ اَحْسَنْتَ خَلْقِیْ فَاَحْسِنْ خُلُقِیْ .

1. ''अल्लाहुम्-म अहसन-त ख़लक़ी फ़-अहसिन ख़ुलुक़ी।''

(ऐ अल्लाह! तूने मेरी सूरत अच्छी बनाई तो मेरे अख़लाक़ भी अच्छे कर।)

(٢) اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ صِحَّةً فِیْ اِیْمَانٍ وَاِیْمَانًا فِیْ حُسْنِ خُلُقٍ .

2. ''अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क सेहह्तन फ़ी ईमानिन व ईमानन फ़ी हुसनि ख़ुलक़िन।''

(ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सेहत, ईमान के साथ और ईमान, अच्छे अख़लाक़ के साथ माँगता हूँ।)

(٣) اَللّٰهُمَّ قَنِّعْنِیْ بِمَا رَزَقْتَنِیْ .

3. ''अल्लाहुम्-म क़न्निअ़नी बिमा रज़क़-तनी।''

(ऐ अल्लाह मुझे उसपर सन्तुष्ट कर दे जो तूने मुझे दिया है।)

(٤) اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْاَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةْ

4. ''अल्लाहुम-म इन्नी असअलुकल अ़फ़-व वलआ़फ़ि-य-त फ़िद्दुनिया वल आख़िरह।''

(ऐ अल्लाह! मैं तुझसे माफ़ी और दुनिया व आख़िरत में आराम और सलामती माँगता हूँ।)

(24) सैयदुल इसतिग़फ़ार यानी मग़फ़िरत तलब करने की सबसे अच्छी दुआ यह है। जिसने शाम के समय इसे पढ़ा और वह उसी रात मर गया, या

सुबह पढ़ा और उसी दिन मर गया तो वह जन्नत में दाख़िल हुआ —

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُکَ، وَاَنَا عَلٰی عَهْدِکَ وَ وَعْدِکَ مَا اسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّمَا صَنَعْتُ، اَبُوْءُ لَکَ بِنِعْمَتِکَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ .

"अल्लाहुम-म अन-त रब्बी, ला इला-ह इल्ला अन-त ख़लक़्-तनी व अना अ़ब्दु-क व अना अ़ला अ़हदि-क व वअ़दि-क मस त-तअ़तु, अऊज़ुबि-क मिन शर्रि मा सनअ़त, अबूउ ल-क बि निअ़म-ति-क अ़लै-य व अबूउ बि-ज़ं-बी फ़ग़फ़िरली, फ़ इन्नहू ला यग़फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन-त।"

(ऐ अल्लाह! तू मेरा परवरदिगार है। तेरे अलावा कोई माबूद नहीं है। तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और जितनी मुझमें ताक़त और सकत है मैं तेरे अहद व पैमान पर क़ायम हूँ, और जो कुछ भी तूने बनाया उसकी बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ, जिन नेमतों से तूने मुझे नवाज़ा है उनको तसलीम करता हूँ। अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ, तू मुझे बख़्श दे कि तेरे सिवा गुनाहों को कोई नहीं माफ़ कर सकता।"

— बुख़ारी

क़ुनूते नाज़िला

जब इस्लाम और मुसलमानों पर कहीं मज़ालिम हों तो इस दुआ को सुबह की नमाज़ में दूसरी रकअत में रुकू के बाद पढ़ना चाहिए —

اَللّٰهُمَّ اهْدِنَا فِیْمَنْ هَدَیْتَ وَعَافِنَا فِیْمَنْ عَافَیْتَ وَتَوَلَّنَا فِیْمَنْ تَوَلَّیْتَ وَبَارِکْ لَنَا فِیْمَا اَعْطَیْتَ وَقِنَا شَرَّمَا قَضَیْتَ فَاِنَّکَ تَقْضِیْ وَلَا یُقْضٰی عَلَیْکَ اِنَّهٗ لَایَذِلُّ مَنْ وَّالَیْتَ وَلَا یَعِزُّ مَنْ عَادَیْتَ تَبَارَکْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَیْتَ، نَسْتَغْفِرُکَ وَنَتُوْبُ اِلَیْکَ وَصَلَّی اللّٰهُ

عَلَى النَّبِيِّ . اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا وَلِلْمُوْمِنِيْنَ وَالْمُوْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَاَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَاصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِهِمْ وَانْصُرْهُمْ عَلٰى عَدُوِّكَ وَعَدُوِّهِمْ اَللّٰهُمَّ الْعَنِ الْكَفَرَةَ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِكَ وَيُكَذِّبُوْنَ رُسُلَكَ وَيُقَاتِلُوْنَ اَوْلِيَائَكَ اَللّٰهُمَّ خَالِفْ بَيْنَ كَلِمَتِهِمْ وَزَلْزِلْ اَقْدَامَهُمْ وَاَنْزِلْ بِهِمْ بَأْسَكَ الَّذِىْ لَا تَرُدُّهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ . يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ اٰمِيْن .

''अल्लाहुम्महदिना फ़ीमन हदै-त, व आफ़िना फ़ीमन आफ़ै-त, व तव्वलना फ़ीमन तवल्लै-त, व बारिक लना फ़ीमा अअ़्तै-त, व क़िना शर्रिमा क़ज़ै-त, फ इन-न-क तक़ज़ी वला युक़ज़ा अ़लैक, इन्नहु ला यज़िल्लु मवाँलै-त, वला यइज़्ज़ु मन आ़दै-त, तबारक-त रब्बना व तआ़लै-त, नसतग़फ़िरु-क व नतूबु इलै-क, व सल्लल्लाहु अलन्नबी। अल्लाहुम्मग़फ़िर लना व लिल मोमिनी-न वल मोमिनाति वल मुसलिमी-न वल मुसलिमाति, व अल्लिफ़ बै-न कुलूबिहिम व असलिह ज़ा-त बैनिहिम वनसुर-हुम अ़ला अ़दुव्वि-क व अ़दुव्विहिम, अल्लाहुम्मल अ़निल क़-फ़-र-तल्ल-ज़ी-न यसुद्दू-न अ़न सबीलि-क, व युकज़्ज़िबू-न रुसुल-क व युक़ातिलू-न अवलिया अक, अलाहुम-म ख़ालिफ़ बै-न कलिमतिहिम, व ज़लज़िल अक़दामहुम व अनज़िल बिहिम ब-अ-स कल्लज़ी ला तरुद्दुहु 'अ़निल क़ौमिल मुजरिमीन, या रब्बल आ़लमीन। आमीन!''

(ऐ अल्लाह! तू हमें हिदायत देकर उन लोगों में शामिल कर जिनको तूने हिदायत दी और हमें हर तरह के अज़ाब और मुसीबत से बचाकर उन लोगों में शामिल कर जिनको तूने आफ़ियत बख़्शी और हमारी सरपरस्ती फ़रमाकर उन लोगों में शामिल कर जिनकी तूने सरपरस्ती फ़रमाई और जो कुछ तूने हमें दिया है उसमें हमें बरकत दे और हमें उन तमाम बुराइयों से बचा ले जिनका आना तूने तय कर दिया है क्योंकि तय करना तेरे ही इख़तियार में है। तेरे फ़ैसले के ख़िलाफ़ नहीं किया जा सकता। बेशक वह इनसान कभी ज़लील नहीं हो सकता जिसको तूने अपनी सरपरस्ती में ले लिया और वह इनसान कभी इज़्ज़त नहीं पा

सकता जिससे तू निगाह फेर ले। तू बहुत ही बुज़ुर्गीवाला है। ऐ हमारे परवरदिगार! और बहुत बाला व बरतर है। हम तुझसे बख़्शिश चाहते हैं और तेरी तरफ़ पलटते हैं। दुरूद व सलाम हो प्यारे नबी पर। अल्लाह! हमें और तमाम मोमिन मर्द और मोमिन औरतों, मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतों को बख़्श दे और उनके दिलों को-जोड़ दे। उनके ताल्लुक़ात दुरुस्त कर दे और अपने और उनके दुश्मन पर उनकी मदद कर। ऐ अल्लाह! उन काफ़िरों को अपनी रहमत से दूर कर दे, जो तेरी राह से रोकते हैं, तेरे रसूलों को झुठलाते हैं और तेरा दम भरनेवालों से जंग करते हैं। ऐ अल्लाह! उनकी इज्तिमाइयत को बिखेर दे, उनके क़दम डगमगा दे और उनपर अपना ऐसा अज़ाब नाज़िल कर जो मुजरिमों से न टले। ऐ तमाम जहानों के रब! हमारी दुआ क़बूल फ़रमा।)